● सीधी, सिंगरौली,मऊगंज, रीवा एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित ● website-https://vindhyatiger.in ● epaper-https://epaper.vindhyatiger.in ● वर्ष : 37, अंक 14, पृष्ठ : 08, सीधी, मंगलवार, 11 फरवरी 2025 - मूल्य : 2.00 रुपया मात्र

दैनिक समाचार पत्र

विन्ध्य टाइगर

हक की बात, बुलंदी के साथ

डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे का बड़ा दावा 5

जानता हूँ मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है : रोहित 6

हमारा काम है हर व्यक्ति की जिंदगी बेहतर बनाना : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के खाते में अंतरित किए 1553 करोड़ रूपए

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को देवास के सोनकच्छ के ग्राम पीपलरांवा से एक करोड़ 27 लाख लाड़ली बहनों के खाते में 1553 करोड़ रूपए, 56 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों के खाते में 337 करोड़ रूपए और 81 लाख किसानों के खाते में 1624 करोड़ रूपये सिंगल क्लिक से अंतरित किये। उन्होंने कार्यक्रम में 144.84 करोड़ रूपये लागत के 53 कार्यों का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रंजीत सागर परियोजना से आस-पास के गांवों को सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। क्षेत्र में हरियाली छायेगी और किसान समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि कि पारस पत्थर से लोहा भी सोना बन जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हर खेत को पानी और बिजली की सुविधा मिले तो किसान समृद्धशाली होंगे और फसलरूपी सोना जरूर मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी और बिजली उपलब्ध करा रही है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई ने 20 वर्ष पहले जो नदी जोड़ो का सपना देखा था आज वह प्रदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरा हो रहा है। प्रधानमंत्री ने हमें केन-बेतवा लिंक योजना के लिए 1 लाख करोड रुपए दिए हैं। इस योजना से पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र की तस्वीर बदल जाएगी। एक अन्य 70 हजार करोड रुपए की पार्वती-कालीसिंध-चंबल योजना पर भी कार्य शुरू हुआ है। प्रदेश के प्रत्येक के गांव, एक-एक खेत तक पानी पहुंचाया जाएगा। इस बार किसानों के लिए गेहूं का समर्थन मूल्य होगा 2600 रूपए होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार का उद्देश्य हर हाथ को काम और हर खेत को पानी देना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार गरीबों, किसानों, युवाओं एवं महिलाओं की बेहतरी के लिए लगातार काम रही है। मध्यप्रदेश सरकार का संकल्प है कि प्रदेश में प्रत्येक युवा को रोजगार मिले, इसके लिए इन्वेस्टर्स समिट कर उद्योगपतियों को आमंत्रित किया जा रहा है। युवाओं को रोजगार देकर दुनिया में भारत का मान बढ़ाना और मध्यप्रदेश को अग्रणी राज्य बनाना हमारा उद्देश्य है। प्रदेश में महिलाओं, किसानों और सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों के कल्याण के लिए प्रदेश में आगे बढ़कर कार्य किया जा रहा है। आज के समारोह में 1 लाख 27 करोड़ लाड़ली बहनों, 56 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों, 81 लाख किसानों को 2054 करोड़ रूपये से अधिक की राशि सिंगल क्लिक से प्रदान की गई। प्रदेश सरकार योजनाओं के संचालन में कोई कमी नहीं रहने देगी। इस मौके पर उन्होंने बताया कि प्रदेश की 76 लाख बहनों को गैस रिफिलिंग के लिए प्रति हितग्राही को 450 रूपये भी प्रदान किये गये हैं।

मैं अपने दोस्त ट्रंप से मिलने के लिए उत्सुक

फ्रांस-अमेरिका की यात्रा से पहले बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस और अमेरिका की अपनी चार दिवसीय यात्रा पर रवाना हो गए हैं। फ्रांस में वे एआई एक्शन समिट की सह-अध्यक्षता करेंगे। वे फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों फ्रांस में पहले भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन करने और अंतर्राष्ट्रीय थर्मोन्यूक्लियर प्रायोगिक रिएक्टर परियोजना का दौरा करने के लिए मार्सिले भी जाएंगे। फ्रांस के बाद वह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के निमंत्रण पर संयुक्त राज्य अमेरिका की दो दिवसीय यात्रा पर जाएंगे।

ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद अपनी पहली अमेरिका यात्रा को पीएम मोदी ने द्विपक्षीय संबंधों की सफलताओं को आगे बढ़ाने का अवसर करार दिया। पीएम मोदी ने फ्रांस रवाना होने से पहले कहा कि इस यात्रा से प्रौद्योगिकी, व्यापार, रक्षा, ऊर्जा और आपूर्ति श्रृंखला लचीलेपन के क्षेत्रों सहित अमेरिका के साथ भारत की साझेदारी को और ऊपर उठाने और गहरा करने के लिए एक एजेंडा विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

पीएम मोदी ने अमेरिका यात्रा को लेकर कहा कि हम दोनों देशों के लोगों के पारस्परिक लाभ के लिए मिलकर काम करेंगे और दुनिया के लिए बेहतर भविष्य को आकार देंगे। उन्होंने कहा कि मैं अपने मित्र राष्ट्रपति ट्रंप से मिलने के लिए उत्सुक हूं। मेरे पास भारत और अमेरिका के बीच व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी के निर्माण में उनके पहले कार्यकाल में एक साथ काम करने की बहुत अच्छी यादें हैं।

वहीं, फ्रांस यात्रा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वह राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण पर फ्रांस का दौरा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह एआई एक्शन समिट की सह-अध्यक्षता करने के लिए उत्सुक हैं। इसमें वे समावेशी, सुरक्षित और भरोसेमंद तरीके से नवाचार और व्यापक सार्वजनिक भलाई के लिए एआई प्रौद्योगिकी के सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि यह यात्रा भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी के लिए 2047 के रोडमैप पर प्रगति की समीक्षा करने का अवसर भी होगी। साथ ही पीएम मोदी ने यह भी बताया कि मैं मजारगुएस युद्ध कब्रिस्तान में उन भारतीय सैनिकों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करूंगा जिन्होंने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी थी।

राष्ट्रपति ने संगम में लगाई आस्था की डुबकी

प्रयागराज। श्रद्धा और आस्था के इस महापर्व महाकुंभ में सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आगमन हुआ। देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पूरे परिवार के साथ मां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में आस्था एवं पुण्य की डुबकी लगाई। साथ ही पूरी दुनिया को एकता तथा सामाजिक समरसता का संदेश दिया। इस दौरान राज्यपाल आनंद बेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा औद्योगिक प्रोत्साहन मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी भी मौजूद रहे।

राष्ट्रपति सुबह करीब सवा नौ बजे बमरौली एयरपोर्ट पर पहुंचीं।

वहां पहले से मौजूद राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री ने उनका स्वागत किया। वहां से अरैल पहुंचीं। इसके बाद क्रूज से वह संगम पहुंचीं। राष्ट्रपति ने सबसे पहले त्रिवेणी जल को स्पर्श करते हुए अपनी श्रद्धा प्रकट की। इसके बाद पवित्र जल में फूल, माला, नारियल अर्पित कर राष्ट्र की समृद्धि और शांति की कामना की। इसी क्रम में राष्ट्रपति ने संगम में एक के बाद एक कई डुबकियां लगाईं। उन्होंने भगवान दिवाकर को अर्घ्य देने के साथ मां गंगा का पूजन अर्चन किया। पूरे विधान और वैदिक मंत्रों के बीच दुग्धाभिषेक किया। साथ ही अक्षत, पुष्प, फल और लाल चुनरी अर्पित की। राष्ट्रपति ने गंगा आरती भी की।

संगम स्नान एवं पूजन के बाद राष्ट्रपति पहले किला घाट, फिर सड़क मार्ग से महावीर एवं त्रिवेणी मार्ग होते हुए किला में पहुंचीं और सरस्वती कूप, अक्षयवट तथा पाताल पुरी में दर्शन-पूजन किया। इसके बाद करीब एक बजे उन्होंने बड़े हनुमान मंदिर में दर्शन-पूजन किया।

ममता कुलकर्णी ने छोड़ा किन्नर अखाड़े में महामंडलेश्वर का पद

मुंबई। पूर्व बॉलीवुड अदाकारा ममता कुलकर्णी को बीते दिनों किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर बनाया गया। उन्होंने प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ में जाकर अपना पिंडदान किया था। उनकी पट्टाभिषेक प्रक्रिया के बाद उन्हें यह पद दिया गया। मगर, ममता के महामंडलेश्वर नियुक्त किए जाने के बाद से ही, उनकी नियुक्ति पर सवाल उठ रहे थे। आज सोमवार को ममता कुलकर्णी ने महामंडलेश्वर के पद से इस्तीफा दे दिया है। न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में ममता ने पद छोड़ने की बात कही है।

स्वच्छ भारत मिशन ने बचाई तीन लाख बच्चों की जान

जल शक्ति मंत्री पाटिल ने राज्यसभा मे दी जानकारी

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार सरकार के स्वच्छ भारत मिशन के तहत उठाए गए कदमों से देश में तीन लाख बच्चों की जान बचाई गई है। जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल सोमवार को राज्यसभा में यह जानकारी दी।

मंत्री ने बताया कि सरकार की खुले में शौच से मुक्ति (ओडीएफ) की नीति के तहत देशभर में करीब 12 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं और अब तक 60 करोड़ लोगों को इस योजना का लाभ मिला है। राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान जल शक्ति मंत्री ने बताया कि इस

योजना ने न केवल स्वच्छता सुनिश्चित की है, बल्कि महिलाओं की सुरक्षा भी बढ़ाई, क्योंकि अब महिलाओं को खुले में शौच जाने के लिए शाम तक इंतजार नहीं करना पड़ता।

उन्होंने कहा, पहले पांच वर्षों में दस करोड़ शौचालय बनाए गए थे। दूसरे चरण में दो करोड़ और शौचालयों का निर्माण किया गया। अब तक कुल 12 करोड़ शौचालय बन चुके हैं। इस योजना से कुल 60 करोड़ लोग लाभान्वित हुए हैं। पाटिल ने यह भी कहा कि स्वच्छ भारत अभियान और ओडीएफ नीति एक निरंतर प्रक्रिया है और इसे आगे बढ़ाने के लिए केंद्र राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम कर रहा है। अपने लिखित जवाब में मंत्री ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में छह फरवरी 2025 तक 16,125 गांवों ने खुद को ओडीएफ-प्लस घोषित किया है। दूसरे चरण में ओडीफ से ओडीएफ-प्लस में परिवर्तित होंगे गांव। मंत्री ने कहा, स्वच्छता राज्य का विषय है।

भारतीय सेना की टुकड़ी पर पाकिस्तान ने की फायरिंग, एक की मौत

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर स्थित कलाल क्षेत्र में सोमवार को पाकिस्तान ने एक बार फिर से अपनी कायराना हरकत को अंजाम दिया है। जानकारी मिल रही है कि दोपहर 2.40 बजे भारतीय सेना की टुकड़ी सीमा पर गश्त कर रही थी। इस दौरान भारतीय सैनिकों को निशाना बना कर पाकिस्तान की ओर से स्नाइपर हमला किया गया। इस हमले में भारतीय सेना का एक जवान घायल हुआ है। घायल सैन्य जवान को प्राथमिक उपचार के दौरान हवाई मार्ग से सैन्य अस्पताल 150 जीएच राजौरी शिफ्ट किया गया।

राजनीति से प्रेरित है केंद्रीय बजट : चिदंबरम

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री पी चिदंबरम में सोमवार को राज्यसभा में केंद्रीय बजट को लेकर सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय बजट 2025-26 राजनीति से प्रेरित था। इसे दिल्ली चुनाव को ध्यान में रखकर बनाया गया था। साथ ही बजट में गरीब और निचले तबके लोगों की अनदेखी की गई। उन्होंने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर पूंजीगत व्यय और राज्यों के अनुदान में कटौती करके राजकोषीय घाटे को पूरा करने का आरोप लगाया। साथ ही इसे खराब अर्थशास्त्र करार दिया। पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा कि बजट के पीछे एक तत्व होता है, लेकिन वह तत्व और दर्शन इस बजट में नजर नहीं आया। बजट के भाषण और आंकड़ों से स्पष्ट है कि इसमें कोई तत्व नहीं है। उन्होंने कहा कि यह साफ है कि बजट पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित था। मैं इस बारे में विस्तार से बात नहीं करना चाहूंगा, लेकिन मैं वित्त मंत्री को इसलिए बधाई दूंगा क्योंकि उन्होंने अपने एक उद्देश्य को पूरा किया।

सोनिया गांधी ने जल्द से जल्द जनगणना कराने की मांग की

नई दिल्ली। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी ने सोमवार को सरकार से जल्द से जल्द जनगणना पूरी करने की मांग की। उन्होंने कहा कि देश में करीब 14 करोड़ लोग खाद्य सुरक्षा कानून (एनएफएसए) के तहत मिलने वाले लाभ से वंचित हो रहे हैं। राज्यसभा में अपने पहले शून्यकाल संबोधन में सोनिया गांधी ने कहा कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के लाभार्थियों की पहचान 2011 की जनगणना के आधार पर की जा रही है, जबकि

देश की जनसंख्या अब काफी बढ़ चुकी है। सोनिया गांधी ने कहा कि यूपीए सरकार की तरफ से 2013 में लागू किया गया यह कानून देश के 140 करोड़ लोगों की भोजन और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक ऐतिहासिक कदम था। कोविड-19 संकट के दौरान भी इस कानून ने लाखों गरीब परिवारों को भुखमरी से बचाया। उन्होंने बताया कि गांवों में 75% और शहरों में 50त्न आबादी को सस्ते अनाज का लाभ देने वाला यह कानून 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर आधारित है। उस समय, कुल लाभार्थियों की संख्या 81.35 करोड़ थी, लेकिन आज 14 करोड़ और लोग इसके हकदार हैं, जो लाभ से वंचित हो रहे हैं। सोनिया गांधी ने कहा, स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार, 10 साल में होने वाली जनगणना 4 साल से ज्यादा देर से हो रही है। 2021 में होने वाली जनगणना अब तक नहीं हुई है और सरकार ने अब तक कोई स्पष्ट समयसीमा नहीं दी है। उन्होंने कहा कि इस साल के बजट में भी जनगणना के लिए कोई ठोस प्रावधान नहीं दिखता, जिससे लगता है कि इसे इस साल भी नहीं कराया जाएगा। उन्होंने सरकार से जल्द से जल्द जनगणना पूरी करने और सभी पात्र लोगों को एनएफएसए के तहत उचित लाभ देने की अपील की।

बीरेन सिंह के इस्तीफे के बाद भाजपा की बंद कमरे में अहम बैठक

नई दिल्ली। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के इस्तीफे के एक दिन बाद राज्य भाजपा प्रभारी संबित पात्रा ने सोमवार को एक होटल में पार्टी के कुछ विधायकों के साथ बंद कमरे में बैठक की। पार्टी सूत्रों के अनुसार, बैठक का बीरेन सिंह के इस्तीफे के बाद अगले मुख्यमंत्री के चुनाव को लेकर चर्चा हुई है।

सूत्रों के मुताबिक, संबित पात्रा ने कम से कम तीन ऐसे विधायकों से मुलाकात की है। जिनके बीरेन सिंह के साथ संबंध तनावपूर्ण चल रहे हैं। अगले 48 घंटों में राज्य में कई और बैठकें होने की संभावना है। इस बीच, राज्य की राजधानी में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है, खासकर संजेंथोंग, सिंगजमेई, मोइरांगखोम, केइसमपट और कंगला गेट जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में।

मणिपुर कांग्रेस के अध्यक्ष के. मेघचंद्र ने सिंह के इस्तीफे का स्वागत किया है, लेकिन राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने के किसी भी प्रयास का विरोध किया है।

सोने की कीमतों ने ध्वस्त किए सभी रिकॉर्ड

नई दिल्ली। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार मजबूत वैश्विक रुख और रुपये के कमजोर होने से सोमवार को दिल्ली में सोना 2,430 रुपये की तेजी के साथ 88,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के नए सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। निवेशकों की धारणा पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से सभी प्रकार के इस्पात और एल्युमीनियम आयात पर 25 प्रतिशत का नया शुल्क लगाने की घोषणा का असर पड़ा। इसके बाद वैश्विक स्तर पर हाजिर बाजारों में सोना 2,900 डॉलर प्रति औंस के रिकॉर्ड स्तर को पार कर गई। आभूषण विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की भारी खरीदारी से भी कीमतों में तेजी आई।

दिल्ली की हार से पंजाब में हलचल

केजरीवाल ने सभी विधायकों की बैठक बुलाई

चंडीगढ़। दिल्ली चुनाव में करारी हार के बाद पंजाब आम आदमी पार्टी में हलचल तेज हो गई है। पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक ने मंगलवार को प्रदेश के सभी विधायकों को दिल्ली में बैठक के लिए बुलाया है। इसी के चलते पंजाब सरकार की आज होने वाली कैबिनेट की मीटिंग स्थगित कर दी गई है। अब यह बैठक 13 फरवरी को चंडीगढ़ में दोपहर 12 बजे आयोजित की जाएगी। दरअसल दिल्ली चुनाव के बाद आम आदमी पार्टी की सरकार अब केवल पंजाब में ही बची है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं नेता प्रतिपक्ष प्रताप सिंह बाजवा ने दावा किया था कि दिल्ली विधानसभा चुनाव हारने के बाद आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल अब पंजाब का रुख कर सकते हैं। बाजवा ने कहा था कि आप के कई विधायक पार्टी छोड़ने को तैयार हैं। ऐसे में आप में आने वाले दिनों में बड़ा फेरबदल देखने को मिल सकता है। यहां तक की प्रदेश में आप मध्यावधि चुनाव कराने के लिए भी रणनीति तैयार कर सकती है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि केजरीवाल लुधियाना से उपचुनाव लड़ सकते हैं। आप के एक विधायक के निधन होने से यह सीट खाली पड़ी है। नेता प्रतिपक्ष बाजवा ने कहा कि कांग्रेस एक मजबूत विपक्ष के तौर पर प्रदेश के लोगों के बीच जाकर जनाधार जुटाने का काम करेगी।

जाम से मचा त्राहिमाम, संगमनगरी को जोड़ने वाले सभी जिलों में भी रेंग रहे वाहन

प्रयागराज। महाकुंभ में संगम स्नान करने के लिए आस्था का सैलाब उमड़ रहा है। हाईवे पर लोग दो घंटें की दूरी दस घंटें में तय कर पा रहे है। लाखों वाहन हर रोज जाम में फंस रहे हैं। प्रशासन जाम से लोगों को निजात दिलाने में पुरी तरह से फेल हो गया है। वैसे सोमवार को शहर में स्थिति सामान्य रहीं। सूत्रों की मानें तो प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जाम को लेकर अफसरों की पेंच कसी हैं।महाकुंभ में देश के कोने - कोने से लोग अपनी प्राइवेट गाड़ियों, रोडवेज की बसों, प्राइवेट बसों से परिवार और गांव के अन्य लोगों के साथ आ रहे है। आंकड़ों पर गौर करें तो प्रतिदिन एक करोड़ से अधिक लोग संगम में स्नान कर रहे है।

तकरीबन साठ फीसदी लोग प्राइवेट साधनों से ही मेले में आ रहे हैं। हाईवे पर जाम में फंसने की वजह से लोग कई दिनों से परेशान हैं। जाम लगने की मुख्य वजह बैरिकेंडिंग लगाकर जगह-जगह वाहनों को रोक देना हैं।

हालात बद से बदत्तर हो गए है। रास्ते में न तो कहीं शौचालय, पानी एवं खाने- पीने का इंतजाम तक नहीं हैं। वाहनों के लिए जगह- जगह पार्किंग का इंतजाम प्रशासन ने किया जरूर हैं। लेकिन हर कोई अपने साधन से ही मेले में आने को आतुर हैं। श्रद्धालुओं के वाहनों की कतार दस किमी तक लगने लगी है। वैसे सोमवार को इसमें कमी महसूस की गई है। हर कोई जाम की वजह से परेशान हैं।

प्रयागराज में यातायात व्यवस्था ध्वस्त होने से हाहाकार मचा हुआ है। शहर के लोग अपने घरों में कैद हो गए हैं। वह बाहर निकलकर रोजमर्रा के जरूरी सामान भी नहीं खरीद पा रहे हैं। स्थिति यह है कि कुछ दूर जाने पर ही पुलिस की बैरिकेडिंग है। किसी भी दशा में पुलिस आगे बढ़ने नहीं दे रही है। अल्लापुर, छोटा बघाड़ा, हासिमपुर रोड, चौक, जानसेनगंज से लेकर कटरा, चौक, सुलेमसराय, अलोपीबाग, दारागंज, रामबाग, बैरहना, सोहबतियाबाग, कीडगंज, मुट्ठीगंज, लाउदर रोड, एएन झा मार्ग, मेडिकल कॉलेज रोड आदि मुहल्लों में रहने वाले लोग परेशान हैं। घर से निकलते ही वाहनों की कतार लगी है और कई घंटे बाद भी गाड़ियां सौ मीटर आगे नहीं बढ़ पा रही है। वाहनों के हार्न और धुएं के चलते लोगों का घरों में रहने भी दूभर हो गया है।

माघी पूर्णिमा पर स्नान के लिए श्रद्धालुओं का रेला उमड़ पड़ा है। पुलिस ने एकल दिशा प्लान को लागू कर दिया है। कई सड़कों को बंद कर दिया गया है। सिविल लाइंस हनुमान मंदिर चौराहे से जानसेनगंज जाने वाले सड़क पर बैरिकेडिंग कर दी गई है। इसी संगम प्लेस, पैलेस, लोहिया मार्ग, जीएचस रोड, पत्रिका मार्ग सहित सभी सड़कों पर आवागमन बंद करके सिविल लाइंस मुख्य मार्ग पर ही आवागमन की व्यवस्था की गई है। मेले से सीधे स्टेशन और रोडवेज स्टेशन जाने वाले मुख्य मार्ग की ही खुले हैं। शार्टकट से जाने वाले लिंक मार्गों को बंद कर दिया गया है।

भाजपा खेल प्रकोष्ठ ने आयोजित की एयर राइफल शूटिंग प्रतियोगिता

जिले में पहली बार आयोजित हुआ इस तरह का कार्यक्रम

सिंगरौली। देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर भारतीय जनता पार्टी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी खेल प्रकोष्ठ ने जिले में पहली बार सभी आयु वर्ग के लिए एयर राइफल शूटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता अटल सामुदायिक भवन बिलौंजी में आयोजित हुई। प्रतियोगिता में भाजपा जिलाध्यक्ष सुंदरलाल शाह, सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह, सीडा अध्यक्ष दिलीप शाह की विशिष्ट उपस्थिति रही। आयोजन की अध्यक्षता खेल प्रकोष्ठ के जिला संयोजक मृत्युंजय प्रताप सिंह ने की। इस एयर राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्ग के प्रतिभागी सम्मिलित हुये तथा प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा दिखाई। इस प्रतियोगिता में मार्गदर्शक के रूप में नेशनल शूटर एवं सतना बंदूक भंडार के संचालक अमित गोयल अपनी टीम के साथ उपस्थित रहे तथा उनके मार्गदर्शन में ये

प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

जिला मीडिया प्रभारी नीरज सिंह परिहार ने बताया कि प्रतिभागियों में महिला एवं पुरुष दोनों संवर्ग के खिलाड़ियों ने सहभागिता निभाई तथा अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। 18 वर्ष उम्र पुरुष संवर्ग में राज्यवर्धन सिंह ने स्वर्ण, वीरेंद्र सिंह लोधी ने रजत एवं रजनीश विश्वकर्मा ने कांस्य पदक प्राप्त किया तथा 18 वर्ष महिला संवर्ग में परिनिका वर्मा ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसी प्रकार 45 वर्ष पुरूष संवर्ग में क्षितिज विक्रम सिंह ने स्वर्ण, अजातशत्रु सिंह ने रजत तथा आदित्य विक्रम सिंह ने कांस्य पदक प्राप्त किया। 45 वर्ष महिला संवर्ग में निधि सिंह ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 50 वर्ष पुरूष संवर्ग में शिव कुमार वर्मा ने स्वर्ण, लाल प्रमोद सिंह ने रजत तथा संजय सिंह ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

60 वर्ष संवर्ग में देवेश प्रताप सिंह ने स्वर्ण तथा रावेन्द्र प्रताप सिंह ने रजत पदक प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को अतिथियों ने प्रमाणपत्र तथा पदक प्रदान किये तथा उनके खेल की प्रशंसा की। अपने उद्बोधन में जिलाध्यक्ष सुंदरलाल शाह ने कहा कि निश्चित ही हमारे खेल प्रकोष्ठ का यह प्रयास सराहनीय है तथा इस प्रकार की प्रतियोगितायें आयोजित होती रहनी चाहिए। निशानेबाजी की इस प्रकार की ये पहली प्रतियोगिता हमारे संगठन के खेल प्रकोष्ठ ने आयोजित की है तथा हम सब आगामी भविष्य में और भी प्रतियोगिताएं व्यापक स्तर पर आयोजित करेंगे तथा जिले की प्रतिभाओं को और भी व्यापकता प्रदान करने का प्रयास करेंगे। विधायक राम निवास शाह ने कहा कि खेल प्रतिभाओं में हर उम्र के खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है तथा हमारे जिले को खेल से संबंधित और भी संसाधन प्राप्त हों ऐसा शासन स्तर पर प्रयास किया जाएगा ताकि हमारे जिले से भी प्रतिभाएं प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रदर्शन दिखा सकें तथा निशानेबाजी के साथ-साथ अन्य खेलों के खिलाड़ी तैयार हों और जिला खेल प्रतिभाओं के लिए भी जाना जाता।प्रतियोगिता अंतर्गत मंचीय संचालन विक्रम सिंह चंदेल ने किया तथा समस्त उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार कार्यक्रम के आयोजक खेल प्रकोष्ठ संयोजक मृत्युंजय सिंह ने किया।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह कार्यक्रम 7 मार्च को होगा आयोजित

सिंगरौली। मुख्यमंत्री कन्या विवाह कार्यक्रम का आयोजन 7 मार्च को किया जायेगा। वही आवेदन करने की तिथि अंतिम तिथि 24 फरवरी निर्धारित की गई है। कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु कलेक्टर चन्द्रशेखर शुक्ला के द्वारा सभी जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों एवं नगरीय क्षेत्र में नगर निगम आयुक्त तथा नगर परिषदो के सीएमओं को इस आशय के निर्देश दिए गए है कि 7 मार्च को आयोजित होने वाले मुख्यमंत्री कन्या विवाह में 1000 हजार जोड़ो का विवाह कराया जाना है। लक्ष्य निर्धारित करते हुयें कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों अपने अपने क्षेत्रो से लक्ष्य के अनुसार जोड़ो का आवेदन कराने के निर्देश दिए है।

साथ ही सभी ग्राम पंचायतों एवं नगरीय क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार कराने के निर्देश दिए है। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि विवाह कार्यक्रम की निर्धारित तिथि से 15 दिवस पूर्व वधू एवं वर को संयुक्त रूप से अथवा उनके माता-पिता द्वारा आवेदन करना अनिवार्य होगा अन्य किसी भी व्यक्ति से आवेदन स्वीकार नहीं किया जावे। किसी भी स्थिति में अंतिम तिथि के बाद आवेदन स्वीकार नहीं किया जावे। आवेदनों की जांच करते समय वधु के पड़ोसियों का पंचनामा अनिवार्य रूप से लिया जाये, जिसमें उस वार्ड के पंच एवं सरपंच के हस्ताक्षर हो साथ ही समंग्र आईडी का मिलान सचिवों से जानकारी भी प्राप्त करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि विवाह तिथि के साथ साथ पंजीयन के अंतिम तिथि का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाये ।

हिंडालको महान के वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वयं रक्तदान कर लोगो को किया प्रेरित

मानवता की सेवा में हिंडालको का योगदान, 36 यूनिट रक्तदान

सिंगरौली। महान एल्युमिनियम और रेडक्रॉस सोसाइटी के सहयोग से 10 फरवरी को महान अस्पताल में एक सफल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंडालको महान के शीर्ष अधिकारियों में डॉक्टर विवेकानंद मिश्रा, पॉवर प्लांट हेड प्रांजल पाठक व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर आशेष शरण ने रक्तदान कर ,रक्दान का आगाज किया। वही हिंडालको महान के कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कुल 36 यूनिट रक्तदान किया।

कंपनी के मानव संसाधन प्रमुख डॉक्टर विवेकानंद ने सभी दाताओं को प्रेरित करते हुए कहा, रक्तदान केवल एक दान नहीं है, बल्कि यह मानवता की सेवा का सर्वोत्तम तरीका है। आपके एक छोटे से योगदान से कई जिंदगियाँ बच सकती हैं। महान एल्युमिनियम न केवल एल्युमिनियम निर्माण में अग्रणी है, बल्कि सामाजिक कार्यों में भी एक मिसाल कायम कर रहा है। आइए, हम सभी मिलकर इस पुण्य कार्य में भाग लें और समाज की भलाई के लिए आगे बढ़ें।पॉवर प्लांट हेड प्रांजल पाठक ने इस अवसर पर कहा

रक्तदान का यह कार्य केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है। जब हम एकजुट होकर मानवता की सेवा करते हैं, तो हम एक मजबूत समाज का निर्माण करते हैं। मैं सभी से अनुरोध करता हूँ कि वे रक्तदान के इस पुण्य कार्य में भाग लें और दूसरों की जिंदगी में बदलाव लाएं।

इस शिविर में प्रमुख सीनियर लीडर्स, जैसे डॉ. विवेकानंद मिश्रा और डॉ. आशेश शरण ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई और रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि रक्तदान से लोगों की जान कैसे बचाई जा सकती है। यह कार्यक्रम रेडक्रॉस सोसायटी के डॉक्टर आरडी द्विवेदी और हरिशंकर की देखरेख में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।डॉ.आशेश शरण ने बताया कि यह 10 फरवरी को आयोजित रक्तदान शिविर का सातवां वर्ष है, जो महान अस्पताल की सामाजिक जिम्मेदारी को दर्शाता है। इस प्रकार, महान अस्पताल ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह न केवल स्वास्थ्य सेवाओं में, बल्कि सामाजिक योगदान में भी अग्रणी है। कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. आशेष शरण, महिला रोग विशेषज्ञ दीसि शरण, सनत पटेल, पंकज सिंह, और योगेश दिवाकर का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अवैध रेत परिवहन करते ट्रेक्टर ट्राली जप्त, सासन पुलिस की कार्यवाही

सिंगरौली। सासन चौकी पुलिस ने रेत का अवैध तरीके से परिवहन करते पाए जाने पर एक ट्रैक्टर ट्रॉली को जब्त किया है। जब्त किए गए वाहनों को शासन चौकी में सुरक्षा के दृष्टिकोण से खड़ा कराया गया है। पुलिस ने कहा कि जब्त किए गए वाहनों को लेकर खनिज गौड़ अधिनियम के तहत प्रकरण बनाकर कलेक्टर न्यायालय में भेजा जाएगा।

सासन चौकी प्रभारी प्रियंका मिश्रा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री के निर्देशन में लगातार अवैध खनिज पदार्थ और अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ अभियान चला कर कार्यवाही की जा रही है। इसी के तहत पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम टूसाखाड़ मयार नदी से एक व्यक्ति बिना नम्बर का ट्रेक्टर स्वराज ट्रेक्टर नीले रंग का माडल 735 ईएफई में अवैध रेत (बालू) लेकर शासन बस्ती तरफ जानें वाला है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम शासकीय हाई स्कुल के पास पहुंचकर ट्रेक्टर को रोका गया तथा लोड रेत के बाद दस्तावेज मांगे गए लेकिन ड्राइवर कोई भी वैध दस्तावेज नहीं दिखा पाया। वहीं ड्राइवर की पहचान लक्ष्मिन साहू पिता स्व. मैकूलाल साहू उम्र 40 वर्ष निवासी शासन चौकी के रूप में की गई। पुलिस ने खान खनिज अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ वैधानिक कार्यवाही गई। इस कार्रवाई में सउनि लेखचन्द्र डोहर, संतोष साकेत, मुनेन्द्र मिश्रा, जितेन्द्र सिंह कश्यप की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कथाकार मोहन राकेश जन्मशती समारोह का भव्य कार्यक्रम सामुदायिक भवन में संपन्न

शब्दों, एवं ध्वनि को सौंदर्य प्रदान कर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करना ही कविता है : शर्मा

सिंगरौली। मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन इकाई सिंगरौली के तत्वाधान में आयोजित सु विख्यात रचनाकार मोहन राकेश के जन्म शती पर विद्वत जनो द्वारा व्याख्यान सत्र का शुभारम्भ एवं विराट काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, इस अवसर पर ऊर्जांचल के रचनाकारों द्वारा संकलित साझा पुस्तक काव्य वर्तिका एवं वरिष्ठ कवि उमाकांत यादव की कृति अभिव्यक्ति का विमोचन उपस्थित गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया। विदित हो इस साझा पुस्तक का संपादन वरिष्ठ कवि प्रविंदु दुबे चंचल द्वारा किया गया। जिसमें चालीस से ज्यादा रचनाकारों ने अपनी प्रस्तुति प्रदान की है। सर्वप्रथम दीप

प्रज्वलन एवं अतिथियों के माल्यार्पण के पश्चात मोहन राकेश जन्म शती पर व्याख्यान करते हुए श्रीमती सीमा शर्मा , डॉक्टर आरडी पाण्डेय, सेवा निवृत पूर्व प्राचार्य राम भुवन द्विवेदी, और कार्यक्रम का सफल संचालन कर रहे शिवार्चन शुक्ल मधुर ने विस्तार से अपने विचार रखे, मुख्य अतिथि डीके शर्मा (आयुक्त नगर पालिक निगम सिंगरौली) ने अपने विचार रखते हुए बताया महान रचनाकार मोहन राकेश ने हिंदी साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है, आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे और लहरों के राज हंस आपकी काल जयी रचनाएं है। आपकी जन्म शती मनाकर हम लोग स्वयं को गौरांवित महसूस कर रहे है, सभी उपस्थित कवियों का स्वागत करते हुए कहा कलमकार समाज का आईना है, कवि जन शब्दों ,भावों को सजाकर श्रोताओं को एक नई दशा और दिशा प्रदान करते है।इस अवसर पर आपने अपनी स्वरचित रचनाएं भी प्रस्तुत की, द्वितीय सत्र का आगाज अठारह पुस्तकों के रचनाकार वयोवृद्ध वरिष्ठ कवि श्रुतिवंत दुबे विजन के अध्यक्षता एवं वरिष्ठ कवि कमल शुक्ल अज्ञान के सफल संचालन में प्रारंभ हुआ। जिसमें ऊर्जांचल से पधारे कवियों ने अपना काव्य पाठ कर सबका मन मोह लिया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी श्री मती मति प्रीति सिकरवार (तहसील दार, सिंगरौली ग्रामीण) ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन से साहित्य का तो उन्नयन होता ही है, हम अपने साहित्यिक धरोहरों को भी याद कर लेते है। प्रस्तुत पुस्तक काव्य वर्तिका हमारे ऊर्जांचल के नवोदित रचनाकारों को भी एक प्लेट फॉर्म उपलब्ध करा रहा है, इसके लिए इसके संपादक प्रविंदु दुबे चंचल बधाई के पात्र है। इस साहित्यिक उन्नयन के लिए मै सदैव आपके साथ खड़ी मिलूंगी। मऊगंज से पधारे जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं संस्था के पूर्व अध्यक्ष प्रवेश मिश्र मयंक ने अपने संबोधन में इस काव्य गोष्ठी एवं व्याख्यान सत्र पर बोलते हुए काव्य, कविता और इसके दिशा व दशा पर अपने विचार रखे, तथा अपने सुमधुर काव्य पाठ से कार्यक्रम को ऊंचाइयां प्रदान की।

सेफ क्लिक अभियान के तहत मोरवा पुलिस ने आयोजित की कार्यशाला

साइबर अपराधों के रोकथाम के लिए एनसीएल अधिकारी समेत स्थानीय लोगों को किया जागरूक

सिंगरौली। मध्यप्रदेश पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना के निर्देश पर मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा 11 दिवसीय सायबर सुरक्षा जागरूकता अभियान 'सेफ क्लिक आयोजित किया जा रहा है। उक्त आयोजन के अनुक्रम में सोमवार को सिंगरौली पुलिस अधीक्षक के दिशानिर्देश पर मोरवा निरीक्षक उमेश प्रताप सिंह द्वारा साइबर अपराध पर जागरूकता के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। एनसीएल सिंगरौली के आधिकारिक मनोरंजन ग्रह में आयोजित इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश पुलिस विभाग के साइबर सुरक्षा अन्वेषक एवं शोधकर्ता कुलदीप वर्मा एवं साइबर सुरक्षा सलाहकार वस्तु अवस्थी ने यहां पहुंचे एनसीएल के पदाधिकारी एवं क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों को वर्तमान

समय में होने वाले साइबर अपराध और सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से अवगत कराते हुए जागरूक किया। उन्हे बताया गया कि साइबर अपराध होने पर तत्काल साइबर क्राइम हेल्प लाइन नम्बर 1930 पर शिकायत दर्ज करायें। इसके साथ ही सोशल मीडिया तथा मोबाइल का उपयोग करते समय सावधानी रखें। इस अवसर पर साइबर एक्सपर्ट टीम ने उपस्थित लोगों को मोबाइल डेटा चोरी होने जैसे साइबर अपराधों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया किस प्रकार आपकी मेल आईडी व मोबाइल को भी हैक किया जा सकता है। साथ ही बताया कि कानून में डिजिटल अरेस्ट जैसा कोई प्रावधान नही है और न ही कानूनन किसी से व्हाट्सएप या फोन के माध्यम से पुलिस कोई पूछताछ करती है, यह सब धोखाधड़ी और सायबर अपराध होता है जिसका शिकार वही बनता है जिसे इसके बारे में जानकारी नहीं है।

पार्षद ने वार्ड- 38 मे किया 21.89 लाख के डब्लूबीएम सड़क का भूमिपूजन

सिंगरौली। नगर पालिक निगम सिंगरौली के वॉर्ड न 38 तुलसी ढोटी में बृजेश शुक्ला के घर से अरुण सिंह चंदेल के घर तक व मारुति नगर मुख्य मार्ग से महेंद्र पांडे के घर तक डब्लूबीएम सड़क का निर्माण कार्य लागत 21.89 लाख रुपए का भूमि पूजन वॉर्ड न 38

तुलसी पार्षद अनिल कुमार वैश्य एवं अपीलीय समिति सदस्य नगर पालिक निगम सिंगरौली के द्वारा सोमवार को किया गया। इस अवसर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विद्यापति शाह, अरुण सिंह चंदेल, दिवाकर वैस, अरविन्द कुमार वैश्य, शिवम् पाण्डे, संदीप कुमार पांडेय, संजीव कुमार सिंह , राम शुभग साकेत, संविदाकार संदीप शुक्ला वॉर्ड 38 की जनता उपस्थित रहे।

शासकीय आईटीआई द्वारा इण्डस्ट्रीज एवं एकेडमी कार्यशाला का किया गया आयोजन

सिंगरौली। मध्यप्रदेश शासन, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग अंतर्गत कौशल विकास संचालनालय, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में शासकीय आईटीआई, सिंगरौली द्वारा आईटीआई में संचालित पाठ्यक्रमों एवं शासन की कौशल विकास योजनाओं तथा उद्योगों की आवश्यकता विषय पर एक दिवसीय इण्डस्ट्रीज एवं एकेडमिक कार्यशाला का आयोजन किया गया।कार्यशाला का शुभारंभ सिंगरौली विधानसभा के विधायक रामनिवास शाह कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में सिंगरौली क्लस्टर के लगभग 55 उद्योगों के प्रतिनिधियों, आईटीआई के प्राचार्यों एवं जिले के प्रशासनिक अधिकारियो सहित 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न उद्योगों से आए प्रतिनिधियों ने शासन की कौशल विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में अपने अनुभव बांटे। कौशल विकास संचालनालय, भोपाल से आए इण्डस्ट्रीज एंगेजमेंट विशेषज्ञ द्वारा क्रमशः मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना, राष्ट्रीय शिक्षुता प्रोत्साहन योजना, डुअल सिस्टम ऑफ ट्रेनिंग, फ्लेसी एम.ओ.यू. युवा संगम, पी.एम. इंटर्नशिप योजना, कौशल विकास नीति के विभिन्न इनिशियेटिव्स पर पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया । पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से योजना के विभिन्न आयामों का विस्तृत विवरण दिया गया तथा इन पर प्रश्न-उत्तर सत्र में उद्यमियों के प्रश्नों का निराकरण किया गया। साथ ही उपस्थित युवाओं को शासन द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सड़के और सफाई व्यवस्था ध्वस्त, वार्डो में फैली गंदगी

सीवर के लिए खोदी गई सड़के महीनो बाद भी नहीं हो पाई रिपेयर, स्थानीय लोग परेशान

सिंगरौली। भले ही नगर निगम सफाई के नाम पर करोड़ों रुपए पानी की तरह बहाया है लेकिन शहर की साफ सफाई ध्वस्त नजर आ रही है, सीवर लाइन बिछाने के लिए खोदी गई सड़के कई महीनो बाद भी नहीं बन पाई तो वही वार्डों में फैली गंदगी देखने के बाद लोग यही कहते हैं कि नगर निगम प्रशासन सो रहा है या फिर ठेकेदार के साथ मिलकर सरकारी पैसों का बंदर बांट कर रहा है।

गौरतलब है कि शहर के पचखोरा और गनियारी में जगह-जगह कचरा बेतरतीब तरीके से फैला हुआ है। सड़क के दोनों तरफ गली मोहल्ले में कचरा का ढेर लगा हुआ है।

वार्डों में गंदगी का ढेर लगे होने के कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है, जिसके कारण बीमारियां फैलने की आशंका बनी हुई है। नगर निगम द्वारा शहर की सफाई व्यवस्था पर हर महीने करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं। लेकिन इसके बाद भी विभिन्न वार्डों में सफाई इन दिनों बुरी तरह चरमरा गई है। नगर निगम प्रशासन इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं कर रहा है। चर्चा है कि नगर निगम अधिकारी सिविल के निर्माण कार्यों सहित सफाई के नाम पर हर महीने लाखों रुपए की कमाई कर रहे हैं। उन्हें शहरों कि सड़कों और स्वच्छता से कोई सरोकार नहीं है। हां दिखावे के लिए मुख्य सड़कों और नदियों को जरूर साफ कराते हैं। ताकि उनकी पोल ना खुले।

नगर निगम के गनियारी मोहल्ले में बालाजी पेट्रोल पंप के पीछे अघोषित कचरा यार्ड बना दिया गया था हालांकि कुछ दिनों से वहां कचरा नहीं फेंका जा रहा है, लेकिन पुराना कचरा सड़कर सड़ांध मार रहा है, आसपास के रहवासियों का हवा चलते ही सांस लेना दूभर हो रहा है,तो वहीं मुख्य सड़क के किनारे की नालियां कचरे से पट्टी है। वहीं नालियों की सफाई न होने से गंदा पानी सड़कों पर फैला हुआ है। गंदा पानी से बदबू व दुर्गंध निकलता है। जिससे वार्ड के लोगों का घर से निकलना दुश्वार हो गया है।

पचखोरा वार्ड मे तो सफाई कहीं दिखती ही नहीं है। सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों से जहां धूल का गुब्बार उठता है तो वहीं जहां भी नजर जाती है वहां सिर्फ गंदगी ही गंदगी नजर आ रही है। सफाई के नाम पर सिर्फ कोरम पूर्ति की जा रही है। वार्ड की नालियां पूरी तरह टूट चुकी है। कूड़े से बदबू निकल रही हैं, जिससे बीमारी फैलने की आशंका बनी रहती है। इस वार्ड मे सबसे खराब स्थिति सड़क की है। इंटरलाकिंग जगह-जगह टूट चुकी हैं। सड़क गढ्डे मे तब्दील हो चुकी है। जिसे लोगों को आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने लाड़ली बहना योजना, किसान कल्याण योजना एवं सामाजिक सुरक्षा पेंशन के पात्र हितग्राहियों के खाते में राशि अंतरित की

सीधी जिले की 2 लाख से अधिक महिलाओं के खाते में 25 करोड़ 89 लाख से अधिक की राशि डाली गई

सीधी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के देवास में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को रूपये 1553 करोड़ की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से उनके बैंक खातों में अंतरित की गई। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजनान्तर्गत प्रदेश के 81 लाख से अधिक किसानो को 1624 करोड़ की राशि का अंतरण किया गया। साथ ही मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक से 56 लाख से अधिक सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राहियों को 337.42 करोड़ रुपए की राशि भी जारी की। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के अन्तर्गत सीधी जिले की 02 लाख 10 हजार 966 पात्र महिलाओं के खाते में प्रति महिला एक हजार 250 रूपये के मान से 25 करोड़ 89 लाख 03 हजार 300 रूपये की राशि अंतरित की गई। कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष

से प्रभारी परियोजना अधिकारी महिला बाल विकास सीधी क्रमांक 1 आशा तिवारी, मुख्यमंत्री किसान कल्याण, सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राही तथा लाड़ली बहनों द्वारा सहभागिता की गई।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना अंतर्गत जिले में 02 लाख 10 हजार 966 पात्र हितग्राहियों के खाते में राशि अंतरित की गई है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के अन्तर्गत जनपद पंचायत कुसमी में 17 हजार 528 महिलाओं, जनपद पंचायत मझौली में 29 हजार 390, जनपद पंचायत रामपुर नैकिन में 44 हजार 395, जनपद पंचायत सीधी में 54 हजार 883 तथा जनपद पंचायत सिहावल में 51 हजार 838 महिलाओं के खाते में 1250 रूपये के मान से राशि अंतरित की गई। कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के साथ ही नगरीय क्षेत्र की महिलाओं को भी लाभांवित किया गया। इसमें नगर पालिक सीधी में 06 हजार 220, नगर परिषद चुरहट में 02 हजार 447, नगर परिषद मझौली में 02 हजार 106 तथा नगर परिषद रामपुर नैकिन में 02 हजार 159 महिलाओं के खाते में 1250 रूपये प्रत्येक महिला के मान से राशि अंतरित की गई।

मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना अंतर्गत जिले के 1 लाख 21 हजार 827 पात्र हितग्राहियों के खातें में 24 करोड़ 36 लाख 54 हजार रूपये की राशि अंतरित की गई। तहसील रामपुर नैकिन के 24519, मझौली के 22554, गोपद बनास के 21994, सिहावल के 16736, बहरी के 13876, चुरहट में 11705 एवं कुसमी के 10443 पात्र हितग्राहियों के खाते मे राशि अंतरित की गई।

राज्यस्तरीय कार्यक्रम में सीधी जिले के 01 लाख 07 हजार 162 पात्र हितग्राहियों के खाते में 06 करोड़ 42 लाख 97 हजार 200 रूपये की राशि अंतरित की गई। जनपद पंचायत कुसमी के 7260, मझौली के 13622, रामपुर नैकिन के 22435, सीधी के 28514 एवं सिहावल के 29278 पात्र हितग्राहियों को 600 प्रति हितग्राही के मान से राशि अंतरित की गई। इसी प्रकार नगरीय निकाय अंतर्गत सीधी के 2523, मझौली के 1178, चुरहट के 1274 एवं रामपुर नैकिन के 1078 पात्र हितग्राहियों के खाते मे राशि अंतरित की गई। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धा पेंशन योजना के 55957, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना के 12123, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय नि:शक्तजन योजना के 2278, मुख्यमंत्री कन्या अभिभावक पेंशन योजना के 711, मंदबुद्धि/बहुविकलांग को आर्थिक सहायता योजना के 1657, सामाजिक सुरक्षा पेंशन वृद्धा योजना के 9066, सामाजिक सुरक्षा पेंशन परित्यक्ता पेंशन योजना के 291, सामाजिक सुरक्षा पेंशन नि:शक्त पेंशन योजना के 7439, दिव्यांग शिक्षा प्रोत्साहन सहायता राशि के 2383, सामाजिक सुरक्षा पेंशन कल्याणी पेंशन योजना के 15244 एवं मुख्यमंत्री अविवाहिता पेंशन योजना के 13 हितग्राहियों के खाते में 600 रूपये के मान से राशि अंतरित की गई।

लघु उद्योग संवर्धन बोर्ड तथा जिला स्तरीय निवेश संवर्धन एवं समन्वय समिति की बैठक आयोजित

उद्योगों की स्थापना में सहयोग के लिए निवेश प्रोत्साहन केंद्र में करें संपर्क : अपर कलेक्टर

सीधी। लघु उद्योग संवर्धन बोर्ड तथा जिला स्तरीय निवेश संवर्धन एवं समन्वय समिति की बैठक का आयोजन अपर कलेक्टर अंशुमन राज की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में जिला स्तर पर उद्योगों को आने वाली विभिन्न कठिनाइयों के निराकरण हेतु चर्चा की गई। साथ ही उद्योगों के सुगम संचालन हेतु परामर्श भी आमंत्रित किए गए। लघु उद्योग भारती के जिला अध्यक्ष नितेश गुप्ता द्वारा जिले में औद्योगिक क्षेत्र स्थापना हेतु निवेदन किया गया जिस संबंध में अपर कलेक्टर द्वारा अवगत कराया गया कि जिले में गोपद बनास तहसील में ग्राम बाड़ी टोला में 9.4 हेक्टेयर क्षेत्रफल की भूमि का चयन औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना हेतु किया गया है जिसे जल्द ही उद्योग विभाग को आवंटित कर औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना की जाएगी। साथ ही उद्योगों को विभिन्न विभागों जैसे प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, विद्युत विभाग इत्यादि से प्राप्त की जाने वाली विभिन्न अनुमतियों के संबंध में होने वाली देरी के संबंध में अपर कलेक्टर ने बताया कि जिले में कलेक्टर कार्यालय में निवेश प्रोत्साहन केंद्र की स्थापना की गई है जिसमें निवेशक आवश्यक अनुमतियों के संबंध में आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। अपर कलेक्टर द्वारा जिले के समस्त उद्योगपतियों से दिनांक 24 एवं 25 फरवरी 2025 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल में आयोजित होने वाले ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2025 में भाग लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में रजिस्ट्रेशन कराने हेतु आग्रह किया गया। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव, नोडल अधिकारी निवेश प्रोत्साहन केंद्र नीलेश शर्मा, एमपीआईडीसी के सलाहकार आर के सिंह, महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र श्रद्धा गोखले सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

एमपी ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल पर 14 फरवरी तक समस्त सेवाएं बाधित रहेगी

सीधी। जिला प्रबंधक लोक सेवा ने जानकारी देकर बताया है कि एमपी ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल का नए सर्वर इन्फ्रा (एसडीसी 2.0) पर माइग्रेशन की प्रक्रिया किये जाने के लिए दिनांक 07.02.2025 की रात्रि 08 बजे से दिनांक 14.02.2025 की रात्रि 08 बजे तक की अवधि के लिए पूर्णत: बंद रहेगी। इस अवधि में एमपी ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल पर समस्त सेवाएं बाधित रहेगी। उन्होंने बताया कि दिनांक 04.02.2025 की रात्रि से दिनांक 10.02.2025 तक पूर्णत: बंद करने का लेख किया गया था। उक्त संबंध में संशोधित कार्यक्रम के अनुसार पोर्टल बंद करने की तारीखों में संशोधन किया गया है। अब पोर्टल की सेवाएं 04.02.2025 की रात्रि से दिनांक 10.02.2025 के बजाए दिनांक 07.02.2025 की रात्रि 08 बजे से दिनांक 14.02.2025 की रात्रि 08 बजे तक की अवधि के लिए पूर्णत: बंद रहेगी।

सुरक्षित इंटरनेट दिवस पर कार्यशाला 11 फरवरी को

साइबर सुरक्षा और इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग पर होगी चर्चा

सीधी। प्रत्येक वर्ष सुरक्षित इंटरनेट दिवस जागरूकता बढ़ाने और इंटरनेट के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से बच्चों, महिलाओं और युवाओं के बीच, फरवरी के दूसरे मंगलवार को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। इस वर्ष सुरक्षित इंटरनेट दिवस 11 फरवरी 2025 को एक साथ बेहतर इंटरनेट के लिए थीम के तहत मनाया जाएगा।

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय के निर्देशानुसार प्रत्येक जिले में 11 फरवरी को कार्यशाला का आयोजन किया जाना है। इस कार्यशाला का उद्देश्य जमीनी स्तर पर लोगों में साइबर सुरक्षा और इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग की प्रासंगिकता के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

उक्त विषय से संबंधित कार्यशाला का आयोजन सीधी जिले में दिनांक 11.02.2025 समय 03 बजे से सभागार कार्यालय कलेक्टर सीधी में आयोजित किया गया है। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने समस्त विभाग प्रमुख एवं अधीनस्थ अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किया है। जमीनी स्तर पर कार्य करने वाली आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं पंचायत विभाग स्टाफ को भी इस कार्यशाला में उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किया गया है।

अवैध उत्खनन एवं परिवहन करते वाहनों को किया गया जब्त

सीधी

अवैध उत्खनन एवं परिवहन की प्राप्त शिकायत पर कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशानुसार उपखण्ड अधिकारी गोपदबनास नीलेश शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में राजस्व-खनिज संयुक्त दल द्वारा रविवार दिनांक 09.02.2025 ग्राम पडरा तहसील गोपद बनास का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उक्त ग्राम में महान नगर के किनारे जेसीबी क्रमांक यूपी 53 ईटी 8420, टाटा 407 क्रमांक एमपी 53 जीए 1841, टाटा 407 क्रमांक एमपी 53 जीए 2462 व बिना नंबर का ट्रैक्टर इंजन क्रमांक सीजे

1354/एसबीजी 05184 चेसिस क्रमांक एमबीएनएके 48 एसीएलटीजी 1329 खनिज पत्थर का अवैध उत्खनन एवं परिवहन करते हुए पाए गए। जांच दल को देखकर मौके से जेसीबी मशीन, ट्रैक्टर व वाहन टाटा 407 क्रमांक 53 जीए 1841 के ऑपरेटर व वाहन चालक मौके पर वाहनों में लोड खनिज को अनलोड कर मशीन व वाहनों को छोड़कर भाग गए तथा टाटा 407 एमपी 53 जीए 2462 मय खनिज पत्थर मौके से फरार हो गया। अवैध उत्खनन एवं परिवहन में संलिप्त समस्त वाहनों व मशीन के स्वामियों के विरुद्ध म. प्र. खनिज (अवैध खनन, परिवहन तथा भंडारण का निवारण) नियम 2022 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है। मौके पर लावारिस खड़े जेसीबी क्रमांक यूपी 53ईटी 8420, टाटा 407 क्रमांक 53 जीए 1841, बिना नंबर का ट्रैक्टर इंजन क्रमांक सीजे 1354/एसबीजी 05184 चेसिस क्रमांक एमबीएनएके 48 एसीएलटीजी 1329 को मेकैनिक, ऑपरेटर तथा वाहन चालकों की व्यवस्था कर सुरक्षार्थ थाना जमोड़ी में खड़ा कराया गया है।

जरूरतमंद को दिया गया कंबल : सोनम

सीधी। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासंघ महिला शाखा सीधी द्वारा जरूरतमंदों को दिए कंबल । शहर से लगे हुए गांव सुकवारी के पास कठोली में जाकर ग्रामीण जनों को 50 कंबल की भेंट दी वही 100 पैकेट बिस्किट भी वितरित किए। उक्त कंबल वितरण कार्यक्रम में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासंघ महिला शाखा सीधी जिला अध्यक्षा श्रीमती सोनम भरत सिंह चौहान, उपाध्यक्ष श्रीमती भारती सिंह, उपाध्यक्ष श्रीमती नीलम सिंह, कोषाध्यक्ष श्रीमती शालिनी सिंह, महासचिव श्रीमती नम्रता सिंह बघेल, महासचिव श्रीमती संगीता सिंह, महासचिव श्रीमती शीला

सिंह, सचिव श्रीमती मनीषा सिंह बघेल, सचिव श्रीमती विभा सिंह, श्रीमती कंचन सिंह, श्रीमती शगुन सिंह, श्रीमती ममता सिंह, श्रीमती सपना सिंह सेंगर, श्रीमती अर्चना सिंह, श्रीमती आँचल सिंह, श्रीमती पूनम सिंह, श्रीमती प्रियंका सिंह, श्रीमती दीपशिखा सिंह आदि महिलाओं का सराहनीय योगदान रहा तथा संजय ड्रग हाउस का भी सहयोग रहा। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासंघ महिला शाखा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में ये कार्यक्रम करने का एकमात्र उद्देश्य था। कि उन लोगों को मदद दी। जाए जो सचमुच में इसके लायक है। ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर के काम किया जाए। जिन क्षेत्रों में बच्चे कुपोषित हैं। इस दौरान क्षत्रिय महासंघ की समस्त महिला सदस्यों ने अत्यन्त सुख की अनुभूति महसूस की एवं हमेशा यही कोशिश रहती हैं कि सभी क्षत्रिय महिलाएं एकजुट हो करके। कुछ ऐसा कार्य करें। जिनके जरिये हम लोगों की कुछ न कुछ मदद कर सकें। इस दौरान क्षत्रिय महासंघ की महिलाओं ने यह महसूस किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में हर वर्ष इस तरह के कार्य अत्यंत आवश्यक हैं। तथा क्षत्रिय महिलाओं ने आगे भी इस तरह के कार्य को और बेहतर तरीके से करने का संकल्प लिया।

मध्यप्रदेश शिक्षक संघ जिला इकाई सीधी का गठन आगामी 16 फरवरी को

सीधी। मध्यप्रदेश शिक्षक संघ की प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा सीधी जिले के जिला इकाई के निर्वाचन हेतु 16 फरवरी की तिथि निर्धारित की गई है, जिसके लिए वंशबहादुर सिंह मरकाम सिंगरौली को निर्वाचन अधिकारी एवं कमलेश तिवारी सतना को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। सीधी जिले के अध्यक्ष राजबहोर पाठक एवं सचिव सतीश पाण्डेय ने संयुक्त रूप से अपने बयान में बताया कि जिला इकाई सीधी के निर्वाचन हेतु अशासकीय महारानी लक्ष्मीबाई हाई स्कूल सीधी, शास्त्री नगर सीधी को निर्वाचन स्थल हेतु चयनित किया गया है। निर्वाचन हेतु समस्त विकासखण्ड और तहसील इकाइयां निर्वाचक होंगी, जबकि जिले की वार्षिक सदस्यता 2024 वाला कोई भी सामान्य सदस्य किसी भी पद हेतु अपना नामांकन दाखिल कर सकता है। सभी विकासखण्ड और तहसील इकाइयों से आग्रह है कि सभी सामान्य सदस्यों को निर्वाचन की तिथि और निर्वाचन स्थल की सूचना अपने स्तर से अलग से भी देना सुनिश्चित करेंगे जिससे सभी सदस्य अपने प्रतिनिधि के निर्वाचन में अपनी यथोचित सहभागिता सुनिश्चित कर सकें। संघ के जिलाध्यक्ष राजबहोर पाठक, सचिव सतीश पाण्डेय, कोषाध्यक्ष अर्जुनसिंह, संभागीय अध्यक्ष रामकृष्ण तिवारी तथा प्रदेश कार्यकारिणी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गौतम मणि अग्निहोत्री ने सीधी जिले के सभी सामान्य सदस्यों से अपील की है कि आगामी 16 फरवरी दिन रविवार को जिला मुख्यालय पर अशासकीय महारानी लक्ष्मीबाई हाई स्कूल सीधी शास्त्री नगर सीधी में समय 10.00 बजे पूर्वाह्न अधिकाधिक संख्या में उपस्थित आकर मध्यप्रदेश शिक्षक संघ की नवीन जिला कार्यकारिणी के गठन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कष्ट करेंगे।

शासकीय कन्या महाविद्यालय में रोजगार मेला 11को

सीधी। मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना के तहत प्रदेश स्तरीय विशेष भर्ती अभियान में शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी में प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन दिनांक 11 फरवरी 2025 को प्रात: 10.30 बजे से होना है। विशेष भर्ती अभियान में सहभागी नियोक्ताओं द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को योग्यतानुसार प्लेसमेंट दिया जाएगा। प्राचार्य द्वारा जानकारी दी गई कि महाविद्यालय में होने वाले रोजगार मेले में सीधी जिले के ज्यादा से ज्यादा छात्र/छात्राएं उपस्थित हो कर सुअवसर का लाभ उठाएं।

सब काम छोड़कर जीवन में तपस्या, यज्ञ और दान करते रहने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती रहती हैं : कृष्णानंद

सीधी। भगवान वशिष्ठ जी भगवान श्री राम जी से कहते हैं कि राम संतो के साथ रहकर, गुरुजनों के साथ रहकर अपने आत्मा का विकास कर लिए हैं। चाहे इस पृथ्वी पर आप जिसकी पूजा करते हैं सब इस पृथ्वी पर आए है सभी ने अवतार लिए हैं वे ही समय के गुरु से अर्चना कर पूजा कर पाठ कर ध्यान कर गुरु की आज्ञा को मानकर ब्रह्म तत्व को प्राप्त कर लेता है उसी का हम स्मरण करते हैं पूजा करते हैं पाठ करते हैं ध्यान करते हैं इसीलिए हम लोग कहते हैं कि जो अध्यात्म में रहता है गरीब हो जाता है। उसकी सफाई जरूरी है जब कपड़ा गंदा होता है तो आप लोग रोज साफ करते हो शरीर गंदा होता है रोज स्नान करते हैं लेकिन मन गंदा होता है तो उसके लिए सत्संग ही साफ करता है सत्संग के लिए हम लोग समय नहीं मिलता है यह मन की सफाई सत्संग से ही होती है और जो भी महापुरुष आप जैसे-

जैसे अध्यात्म में जाएंगे वैसे-वैसे सांसारिक वस्तुएं अपने आप आपके तरफ आकर्षित होने लगती है। अभी आप लोग कुंभ में देखें है कि बाबा लोगों का करोड़ों करोड़ों का पंडाल लगा है खर्च किए हैं क्या वह व्यापार करते हैं ? क्या कोई दुकान किए है ? किन्तु उनके यहां पैसा रुपया अपने आप आता रहता है आप इसका प्रैक्टिकल देख सकते हैं जो अध्यात्म में रहेगा ठीक ठीक से। आप जो संकल्प लिए हैं मानव का सेवा करना चाहता हूं सत्संग करना चाहता हूं यज्ञ करना चाहता हूं जितना बड़ा संकल्प उतना सब पूरा हो जाता है। यज्ञ के लिए जितनी रफ्तार से संकल्प करने में लगेंगे उसी रफ्तार से लक्ष्मी आपके यहां दौड़ती हुई आती है। लक्ष्मी है विष्णु के साथ रहती है। आप जानते हो कि इस देश के बहुत ही गरीब ब्राह्मण मदन मोहन मालवीय जी ने बचपन में संकल्प लिए कि कांशी में विश्वविद्यालय खोलने का। गरीब ब्राह्मण जानकर सब हंसते थे किन्तु उन्होंने खुलवा लिए। यदि आप सच में शुद्ध संकल्प लेते हैं बड़ा संकल्प लेते हैं उसके अनुसार आपके यहां अपने आप एनर्जी दौड़ने लगती हैं। इस विश्व ब्रह्मांड में हर तरह की एनर्जी है रिमोट लेते ही जो चाहे बटन दबाते ही टीवी पर चैनल आने लगता है चैनल तो हजारों हजार है इसी तरह से आपके अंदर भी मन का चैनल है मन का रिमोट है चित्त का चैनल है जैसे अब दबाया कमेंट शुभ काम करना चाहता हूं अच्छा काम करना चाहता हूं विद्यालय बनाना चाहता हूं विश्वविद्यालय खोलना चाहता हूं खोल लिए न। धर्म करना चाहता हूं सत्संग करना चाहता हूं।

शिकायतों का समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करें : सीईओ

सीधी

समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि सभी विभाग प्रमुख अपने विभाग से संबंधित शिकायतों की नियमित समीक्षा करेंगे। स्वयं भी शिकायतकर्ताओं से संपर्क करेंगे तथा अधिक से अधिक शिकायतों का संतुष्टि के साथ निराकरण सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने आगामी एक सप्ताह में अभियान चलाकर अधिक से अधिक शिकायतों को संतुष्टि के साथ निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। सीईओ जिला पंचायत ने सीएम मोनिट में चिन्हित प्रकरणों को तत्परता से निराकृत करने के निर्देश दिए हैं।

सीईओ जिला पंचायत द्वारा समस्त उपखण्ड अधिकारियों तथा

पंचायत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत सर्वे का कार्य किया जा रहा है। सर्वे कार्य की सतत निगरानी रखते हुए यह सुनिश्चित करेंगे कि कोई भी पात्र व्यक्ति योजना के लाभ से वंचित नहीं रहे। इस कार्य में उदासीनता या लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों के विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी।

बोर्ड परीक्षाओं में रखें कड़ी निगरानी

अपर कलेक्टर ने कहा कि आगामी समय में जिले में कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड परीक्षाएं सम्पन्न होनी है। सभी बोर्ड परीक्षाओं की सुचिता बनी रहे तथा शांतिपूर्ण ढंग से निर्विघ्न परीक्षाएं सम्पन्न हों। जिले में पेपर लीक या सामूहिक नकल जैसी घटनाएं नहीं हों अपर कलेक्टर ने सभी संबंधित अधिकारियों को बोर्ड परीक्षाओं के दौरान कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान प्रायवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ अजय मिश्रा भी उपस्थित रहें।

अपर कलेक्टर ने कहा कि आगामी रविवार 16 फरवरी को म.प्र. लोक सेवा आयोग की परीक्षा का आयोजन जिला मुख्यालय के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में किया जायेगा। परीक्षा केन्द्रों के निगरानी के लिए अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। सभी अधिकारी इस आशय का प्रमाण पत्र अवश्य देंगे कि उनके परिवार का कोई भी सदस्य परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो रहा है।

बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

महाकुंभ में हादसों का सिलसिला

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि किसी बहुप्रचारित आयोजन में एक ही तरह के हादसे बार-बार सामने आएं और उनसे सबक लेना जरूरी न समझा जाए। महाकुंभ मेले में शुक्रवार को एक बार फिर आग लग गई। हालांकि इसमें किसी की जान नहीं गई और आग पर काबू पा लिया गया, लेकिन सच यह है कि वहां लापरवाही की वजह से ऐसे हादसे एक तरह का सिलसिला बन गए हैं। महाकुंभ की शुरूआत से अब तक आग लगने की कई घटनाएं हो चुकी हैं। किसी भी हादसे का सबक यह होना चाहिए कि कम से कम उसके बाद ऐसे इंतजाम किए जाएं, ताकि फिर वैसा दुबारा न हो। मगर यह समझना मुश्किल है कि पहली बार व्यापक पैमाने पर आग भड़कने और उसमें कई पंडाल जल कर खाक हो जाने के बावजूद व्यवस्था के मोर्चे पर अब भी लापरवाही क्यों कायम है। सवाल है कि आग लगने से उपजने वाले जोखिम की गंभीरता की ऐसी अनदेखी की क्या वजह है और क्या इस तरह की लापरवाही के लिए किसी की जिम्मेदारी तय की जाएगी। यह छिपा नहीं है कि सरकार की ओर से महाकुंभ में हर स्तर पर व्यापक सुरक्षा व्यवस्था और सुविधाएं मुहैया कराने का दावा करते हुए ज्यादा से ज्यादा लोगों को वहां पहुंचने के लिए प्रेरित किया गया था। ऐसे बहुत सारे लोग होंगे, जिन्होंने सरकार के उन वादों के भरोसे वहां जाना तय किया। मगर यह अफसोस की बात है कि सरकारी दावे जमीनी स्तर पर उतने प्रभावी नहीं दिख रहे। आग लगने की कई घटनाओं से इतर मौनी अमावस्या के दिन स्नान के मौके पर हुई भगदड़ और उसमें कई लोगों की जान जाने से यही पता चलता है कि हादसों से बचाव के लिए निगरानी और चौकसी के मोर्चे पर सरकार नाकाम रही है। एक के बाद एक हादसों के मद्देनजर सरकार को यह सोचने की जरूरत है कि उसकी व्यवस्था में किस स्तर पर कोताही या निर्देशों की अनदेखी हो रही है। वरना आग लगने की कोई घटना कभी ऐसी शक्ल भी ले सकती है, जो भगदड़ और उसके नतीजों की तरह भयावह त्रासदी साबित हो जाए।

अरविंद और राजनीति का अंधकूप

लगभग बारह वर्ष के इस सत्ता-काल में एक-एक कर उनके पुराने साथी या तो किनारा कर चुके हैं अथवा उन्हें किनारे कर दिया गया है। जो लोग संघर्ष के दिनों में उन्हें अरविंद कहकर पुकारते थे, वे अब उन्हें 'सर' या 'सर जी' कहते हैं। इसके बावजूद उनकी अगुवाई में आम आदमी पार्टी ने न केवल दिल्ली का चुनाव लगातार तीन बार जीता, बल्कि पंजाब में भी हुकूमत स्थापित कर ली। गुजरात के पिछले विधानसभा चुनाव में आप अपने सिर्फ पांच प्रत्याशी जीता सकी, लेकिन 13 फीसदी के करीब वोट पाकर यह नवोदित पार्टी राष्ट्रीय राजनीतिक दल का दर्जा हासिल करने में सफल रही ।यही वजह है कि दिल्ली की मौजूदा हार कई कहानियां एक साथ बयान करती है।

(शशि शेखर)

वाकया वर्ष 2013 का है। अरविंद केजरीवाल नई दिल्ली में 'हिन्दुस्तान' कार्यालय आए और एक वरिष्ठ सहयोगी से कहा कि आप लोग 'देश के लिए जरूरी' जन-लोकपाल आंदोलन को ठीक से नहीं छापते। उनकी यह भी इच्छा थी कि वह हमारे संपादकीय सहकर्मियों से जन-लोकपाल, भ्रष्टाचार और सूचना के अधिकार के संबंध में विस्तृत वार्ता करें। मुझे सुझाव अच्छा लगा। कुछ दिनों बाद वह 'हिन्दुस्तान टाइम्स बिल्डिंग' में हमारे सहकर्मियों के बीच थे।

वह भारतीय राजस्व सेवा की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़कर संघर्ष के कठिन रास्ते पर निकल पड़े थे, इसलिए लोग उन्हें गंभीरता से लेते थे। इसी बीच हम लोगों ने 'हिन्दुस्तान' में भ्रष्टाचार के खिलाफ 'कलंक कथा' नाम की शृंखला शुरू की। अरविंद उन अंकों के अतिथि संपादक थे। उनके सुझाव तार्किक और समझदारी भरे होते। तब से अब तक अरविंद केजरीवाल ने लंबी यात्रा तय की है।

लगभग बारह वर्ष के इस सत्ता-काल में एक-एक कर उनके पुराने साथी या तो किनारा कर चुके हैं अथवा उन्हें किनारे कर दिया गया है। जो लोग संघर्ष के दिनों में उन्हें अरविंद कहकर पुकारते थे, वे अब उन्हें 'सर' या 'सर जी' कहते हैं। इसके बावजूद उनकी अगुवाई में आम आदमी पार्टी ने न केवल दिल्ली का चुनाव लगातार तीन बार जीता, बल्कि पंजाब में भी हुकूमत स्थापित कर ली। गुजरात के पिछले विधानसभा चुनाव में आप अपने सिर्फ पांच प्रत्याशी जीता सकी, लेकिन 13 फीसदी के करीब वोट पाकर यह नवोदित पार्टी राष्ट्रीय राजनीतिक दल का दर्जा हासिल करने में सफल रही।यही वजह है कि दिल्ली की मौजूदा हार कई कहानियां एक साथ बयान करती है।

सत्ता पाने के बाद केजरीवाल के बदलते रंग-ढंग और बयान, उन अरविंद केजरीवाल को हर रोज मुंह चिढ़ाते थे, जो कभी मीडिया संस्थानों में घूमकर या जंतर-मंतर पर मुट्ठी भर लोगों से विमर्श कर या राजघाट पर मौन प्रदर्शन के जरिये 'वैकल्पिक राजनीति' के सपनों के पंख संजोया करते थे। उन दिनों वह कहते थे, सुरक्षा नहीं लूंगा, आलीशान बंगले में नहीं रहूंगा और वीआईपी तामझाम नहीं अपनाऊंगा। उनके प्रशंसक इसका उल्टा होते देख अवाक् रह जाते थे। संघर्ष के दिनों में वह किसी पर भी भ्रष्टाचार का आरोप जड़ते हुए उसके इस्तीफे की मांग कर देते थे। 'शराब घोटाले' के आरोप में जब केजरीवाल खुद जेल गए, तो उन्होंने त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया। इस फैसले ने उन्हें सांघातिक नुकसान पहुंचाया, लेकिन किस्सा यहीं खत्म नहीं होता। उनके आलीशान राजकीय आवास पर पहले मुख्य सचिव और बाद में सांसद स्वाति मालीवाल से शारीरिक बदसुलूकी होने पर भी लोग हक्का-बक्का रह गए थे।

कोई आश्चर्य नहीं कि पिछले एक दशक में यह सवाल बार-बार उठा कि क्या यही वह 'वैकल्पिक राजनीति' है, जिसने उन्हें कुर्सी दिलाई?

अरविंद के तमाम चुनावी वायदे झूठे साबित हुए। उन्होंने दिल्ली वालों से कहा था कि आपका यह बेटा 2025 में आपको स्वच्छ यमुना में स्नान करवाएगा। यमुना आज भी संसार की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में एक है। दिल्ली नगर निगम का चुनाव जीतने से पहले उन्होंने तमाम वायदे किए थे, लेकिन हुआ क्या? राजधानी की खराब सड़कें, प्रदूषित पेयजल और बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटें उनकी रही बची कलई हर रोज खोल रही थीं। जनता ने कथनी-करनी के इस भेद की सजा सुना दी है।

यह चुनाव जीतने के लिए केजरीवाल ने शोशेबाजी के साथ तमाम जतन किए थे। उन्होंने 19 विधायकों के टिकट काटकर जिन दल-बदलुओं को मैदान में उतारा, उनमें से अधिकांश चुनावी समर में खेत रहे। आप ने 43 मौजूदा विधायकों को फिर टिकट दिया, उनमें से 28 हार गए। केजरीवाल के साथ उनके नायब मनीष सिसोदिया और तमाम तीरा-तुक्काम भी धराशाई हो गए हैं। इसे उनके 'दंभ और दगाबाजी' की पराजय माना जाएगा।

इसमें कोई शक नहीं कि आम आदमी पार्टी को अब अस्तित्व की लड़ाई लड़नी होगी। अभी से सवाल उठ रहे हैं कि क्या वह पंजाब की सरकार बचा पाएगी? कांग्रेस ने अंतिम नतीजों से पहले ही दावा ठोक दिया कि पंजाब में मुख्यमंत्री सहित 30 आप विधायक पाला बदलने को तैयार हैं। आप अभी तक एक पार्टी की जगह एक मुखिया के इशारों पर चलने वाला समूह रही है। क्या पुनः उठ खड़ा होने के लिए जरूरी नैतिक बल उसके पास रह बचा है? कांग्रेस ही नहीं, भाजपा भी उसकी कमजोरियों का पूरा लाभ उठाने की कोशिश तत्काल करेगी। आने वाले हफ्तों में आप के संचालक मंडल को नई कानूनी चुनौतियों से भी दो-चार होना पड़ सकता है।

आंकड़ों की दृष्टि से इस चुनाव को परखें, तो केजरीवाल अपना वोट बैंक बचाने में बुरी तरह असफल रहे हैं। पिछली बार आम आदमी पार्टी ने 53.57 फीसदी मत हासिल किए थे। इस बार उन्हें महज 43.55 प्रतिशत मत मिले हैं। इसके विपरीत भाजपा ने पिछले चुनाव के मुकाबले सात फीसदी से अधिक की उछाल मारी है। ऐसा कैसे हुआ?

लोकसभा चुनाव में मिले झटके के बाद भगवा दल ने गहरा आत्ममंथन किया था। हरियाणा और महाराष्ट्र में हासिल हुई जबरदस्त जीत इसी सुधरी रणनीति से उपजी थी। भाजपा ने उसे दिल्ली में भी दोहराया। इसने आप की मुफ्त रेवड़ियों के दांव के धुर्रे उड़ा दिए। केजरीवाल रह-रहकर प्रधानमंत्री मोदी को चुनौती देते थे। चौथे आम चुनाव को 'केजरीवाल बनाम मोदी' बनाने से पहले उन्हें अपने जर्जर संगठन और शासन को दुरुस्त करना चाहिए था, उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस चुनाव ने एक बार फिर मोदी के लुभाऊ और टिकाऊ चेहरे के साथ अमित शाह की संगठन क्षमता का लोहा मनवा दिया है।

भाजपा की खूबी है कि एक चुनाव खत्म होता नहीं कि वह दूसरे की तैयारी शुरू कर देती है। शनिवार की सुबह नतीजे आने की पूर्व संध्या पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहार के राजग सांसदों से रूबरू थे। इस बैठक का एक ही मौजूं था, बिहार की एक और विजय। हालांकि, हर सफलता चुनौती लेकर आती है। भाजपा को एक ऐसा मुख्यमंत्री चुनना होगा, जो पार्टी की अंदरूनी राजनीति के साथ जन-कल्याण के वायदों को पूरा कर सके।

यहां कांग्रेस की चर्चा जरूरी है। देश की सबसे पुरानी पार्टी ने पिछली बार के 4.63 फीसदी मतों में लगभग दो अंकों का इजाफा जरूर किया है, पर वह एक भी विधायक जिताने में नाकामयाब रही। इस हार के बावजूद एक बात तय हो गई है कि कांग्रेस भले तमाम राज्यों में अपने बूते पर चुनाव नहीं जीत पाती, लेकिन कामयाबी हासिल करने के लिए क्षेत्रीय दलों को उसकी जरूरत पड़ती है। झारखंड का पिछला चुनाव इसका उदाहरण है। कुछ दिलजले कह सकते हैं कि पार्टी ने गुजरात और हरियाणा का बदला चुका लिया, लेकिन राज्य-दर-राज्य ऐसी हार कांग्रेस नेतृत्व के लिए शुभ संकेत नहीं है।

इसके साथ ही 'इंडिया ब्लॉक' के अस्तित्व पर भी सवाल उठ खड़े हुए हैं। शनिवार की सुबह जब नतीजे आने शुरू भी नहीं हुए थे, तभी उमर अब्दुल्ला के एक ट्वीट ने चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया। उमर ने एक मीम लगाते हुए लिखा था- और लड़ो आपस में। उमर गलत नहीं हैं। इस चुनाव का यह भी संदेश है कि भाजपा से पार पाने के लिए सभी विपक्षी दलों को एक होना होगा।

अंत में एक जरूरी सवाल। जो अरविंद केजरीवाल कभी राजनीतिक सड़ांध के विरुद्ध एक धर्मयोद्धा की तरह उभरे थे, वह खुद इसका हिस्सा क्यों और कैसे बन गए? केजरीवाल को इसका जवाब देना ही होगा। राजनीति के अंधकूप से उबरने का अकेला रास्ता यही है।

संतुलन में मन और जीवन स्थिर करें

(सुंदरचंद ठाकुर)

पतंजलि कहते हैं कि मन एक झील की तरह है। जब इसका पानी स्थिर होता है, तो यह साफ तस्वीर दिखाता है। लेकिन जब यह अशांत होता है, तो सब कुछ धुंधला और विकृत हो जाता है। यही स्थिति हमारे जीवन में होती है। मन में उठने वाले विचार- जैसे डर, गुस्सा, लालच, और मोह- हमारे सोचने के तरीके को दूषित कर देते हैं। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग तनाव, चिंता और भावनात्मक उतार-चढ़ाव का सामना करते हैं। इसके चलते उनके फैसले लेने की क्षमता, उनकी उत्पादकता और खुशहाली पर सीधा असर पड़ता है।

महर्षि पतंजलि ने अपनी किताब 'योगसूत्र' में जीवन के सच्चे विकास और सफलता के लिए मन के संतुलन पर जोर दिया है। उनका कहना है कि मन के विचारों और भावनाओं की उथल-पुथल को शांत किए बिना न तो आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ सकते हैं और न ही सांसारिक। उनकी यह सीख योग में ही नहीं बल्कि जीवन के हर पहलू पर लागू होती है।

पतंजलि कहते हैं कि मन एक झील की तरह है। जब इसका पानी स्थिर होता है, तो यह साफ तस्वीर दिखाता है। लेकिन जब यह अशांत होता है, तो सब कुछ धुंधला और विकृत हो जाता है। यही स्थिति हमारे जीवन में होती है। मन में उठने वाले विचार- जैसे डर, गुस्सा, लालच, और मोह- हमारे सोचने के तरीके को दूषित कर देते हैं। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग तनाव, चिंता और भावनात्मक उतार-चढ़ाव का सामना करते हैं। इसके चलते उनके फैसले लेने की क्षमता, उनकी उत्पादकता और खुशहाली पर सीधा असर पड़ता है।

जैसे पतंजलि ने मन के संतुलन की बात कही वैसे ही महात्मा बुद्ध ने भी अतियों से बचने की बात की। लगभग एक ही जैसी बातें हैं दोनों। बुद्ध ने परम ज्ञान पाने से पहले कड़ी तपस्या और विलासिता के दोनों रास्ते अपनाए, लेकिन दोनों में संतोष नहीं मिला। अंततः उन्होंने मध्य मार्ग अपनाया-एक ऐसा रास्ता जो संतुलन पर आधारित था। बुद्ध ने ध्यान और बोध के साथ जीने पर जोर दिया। उन्होंने समझाया कि मन का संतुलन लालसा, घृणा, वासना और लालच जैसे मन की हर अति से हमें मुक्त करता है। यह मुक्ति हमारे लिए प्रज्ञा और करूणा के साथ जीवन जीना संभव बनाती है।

बुद्ध ही नहीं स्वामी विवेकानंद ने भी संतुलित मन की शक्ति को जीवन में सफलता की कुंजी बताया। उनका मानना था कि एक शांत और नियंत्रित मन असाधारण कार्य कर सकता है। लेकिन एक अशांत और संदेह से भरा मन सबसे बड़ा बाधक

बनता है। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म महासभा में उनका ऐतिहासिक भाषण इसी मानसिक संतुलन का परिणाम था। उन्होंने कहा था, हम जितना शांत रहेंगे, उतना ही हम प्यार करेंगे और हमारे कार्य उतने ही अच्छे होंगे।

असल में संतुलित मन के जरिए हम अपने व्यावहारिक रोजमर्रा के जीवन को बेहतर साध सकते हैं। हम सही फैसले ले सकते हैं। गुस्से में और अशांत मन से लिए गए फैसले हमेशा गलत साबित होते हैं। संतुलित मन से हम मुश्किल स्थितियों का बेहतर सामना कर सकते हैं। हम मन के भटकावों को रोक सकते हैं क्योंकि संतुलित मन हमें हमेशा ऊर्जावान बनाए रखता है और इस ऊर्जा की मदद से हम खुद को कमजोर नहीं पड़ने देते।

अब सवाल उठता है कि संतुलित मन पाया कैसे जाए। तो पतंजलि कहते हैं कि नियमित ध्यान मन की नकारात्मकता को कम करता है। बुद्ध वर्तमान क्षण में जीने पर जोर देते हैं। स्वामी विवेकानंद अपनी इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण बनाए रखना जरूरी मानते हैं। जबकि भगवद्गीता परिणामों से वास्ता छोड़ कर्म में डूबने की शिक्षा देती है। इतना अगर कर पाएंगे तो संतुलन आपकी चेतना में स्थिर होने लगेगा।

इस बात को मन में गांठ बांधकर रख लें कि संतुलन ही जीवन की समस्याओं का निराकरण है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में जीवन के चार पुरुषार्थों को साधने का एक ही उपया है- संतुलन।संतुलन में मन को और जीवन को स्थिर करें। ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

वर्ग पहेली 5639

1	2		3	4		5	
6			7			8	9
	10				11		
12			13	14			
		15		16		17	
18	19		20		21		2
23			24				
	25				26		

संकेतः बाएं से दाएं
1. 22 सितंबर 1971 को इस भौतिक विज्ञानी और रसायन शास्त्री का निधन हुआ था (7)
6. हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में पाया जाने वाला जंगली बैल (2)
7. संगीत में स्वर का विस्तार (2)
8. आफत, भूत-प्रेम बाधा (2)
10. जूते बनाने का एक उपकरण जिसे चर्मकार इस्तेमाल करते है (2)
11. यह देश सन् 1935 तक फारस देश के नाम से जाना जाता था (3)
12. मयूर, हमारा राष्ट्रीय पक्षी (2)
13. बांस की चटाई को यह कहते है (3)
16. गहन चिंतन करने या अध्ययन करने का भाव (3)
18. ध्वनि को सुरक्षित रखने का यंत्र रिकॉर्ड (4)
21. डोलना, छिलना, विचलित होना (3)
23. न्यायाधीश (2)
24. एक राजनीतिक पार्टी का संक्षिप्त नाम (3)
25. जलाशय,सरोवर (3)
26. महाराष्ट्र की गोदावरी नदी के तट पर बसा एक शहर जिसके समीप पंचवटी वन स्थित है (3)

ऊपर से नीचे
1. उत्तरप्रदेश की पूर्व महिला मुख्यमंत्री (सिर्फ नाम), मोहकारिणी शक्ति (2)
2. वचन, प्रतिज्ञा (4)
3. कोमल कांड, सुंदर स्त्री (2)
4. प्रशंसक, पंखा, अंधभक्त (2)
5. वामहस्ती, बायें हाथ से काम करने वाला व्यक्ति (3)
9. भर्त्सना, धिक्कार, लताड़ (3)
11. एक पौराणिक भक्त राजा का नाम जिसने श्रीकृष्ण की बात मान अपना शरीर आरे से चिरवाया था (4)
14. प्रेमकर्ता, आनंदप्रद (5)
15. 1975 की सुपर-डुपर हिट फिल्म जिसके निर्देशक रमेश सिप्पी थे (2)
17. बहुमुल्य रत्न, एक संख्या सूचक अंग (2)
19. अपनापन, निजत्व (3)
20. बुरा, हीन, बिगड़ा हुआ (3)
22. नाम धारण करने वाला, नाम वाला (3)

वर्ग पहेली 5638 का हल

द्वि	टे	न		कृ	ष्ण	कां	त
ज	ल	ज		पा		जी	ना
	र	फ	यु	क		हा	
सा			डा			उ	स
ग		अ	पे	क्षा		स	म
र		मा	रट	र			झ
मा	न	व		क	दा		दा
था		स्था	म		ग	ज	र

एक हार और सब खत्म? , एक ही जैसे मुद्दों ने दिया झटका

(कृष्णा वाजपेई)

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के नतीजों में भाजपा की 48 सीटों के साथ प्रचंड जीत हुई है और 27 साल बाद पार्टी की दिल्ली की सत्ता में वापसी हुई है। आम आदमी पार्टी, 63 सीटों से खिसककर 22 सीटों पर आ गई है आम आदमी पार्टी के हारने वाले नेताओं में मनीष सिसोदिया से लेकर सत्येंद्र जैन, सौरभ भारद्वाज, सोमनाथ भारती, दुर्गेश पाठक जैसे नेता अपनी सीट गंवा चुके हैं। इतना ही नहीं, खुद अरविंद केजरीवाल खुद नई दिल्ली सीट से हार गए हैं।

नई दिल्ली से बीजेपी के पूर्व सांसद और पूर्व सीएम साहिब सिंह वर्मा के बेटे परवेश वर्मा ने अरविंद केजरीवाल को करीब 4000 से ज्यादा वोटों के अंतर से सियासी मात दी है। अरविंद केजरीवाल को लेकर मीडिया रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया जा रहा है कि एक वक्त उनकी सीट बदलने या दो सीटों से चुनाव लड़ने की चर्चा थी, लेकिन पार्टी ने ऐसा इसलिए नहीं किया, क्योंकि इससे आम आदमी पार्टी चुनाव में बैकफुट पर दिखती।

शीला दीक्षित को दी थी 2013 में मात- अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी के गठन के बाद जब दिल्ली में पहला विधानसभा चुनाव लड़ा था, तो उन्होंने भी तत्कालीन सीएम और कांग्रेस नेता शीला दीक्षित को मात दी थी। शीला दीक्षित लगातार 3 कार्यकाल सीएम रही थीं, और नई दिल्ली विधानसभा उनका किला मानी जाती थीं, लेकिन केजरीवाल ने उन्हें हरा दिया था, जिसके बाद से शीला दीक्षित, चुनावी राजनीति में साइडलाइन हो गई थी।

शीला दीक्षित की तरह हुआ केजरीवाल की हाल?- अरविंद केजरीवाल ने शीला दीक्षित को हराया था और अब परवेश वर्मा ने नई दिल्ली की सीट से केजरीवाल को हरा दिया था। शीला दीक्षित जहां चुनाव हारने के साथ ही सत्ता से बाहर हो गई थी। शीला दीक्षित तीन बार सीएम रही थीं। अरविंद केजरीवाल भी तीन बार सीएम रहे थे।शीला दीक्षित को अरविंद केजरीवाल ने भ्रष्टाचार, पानी की कमी, टैंकर माफिया जैसे मुद्दों पर घेरा था। केजरीवाल ने अपना पूरा चुनावी कैंपेन ही इन मुद्दों पर लड़ा था। बीजेपी ने भी अरविंद केजरीवाल के खिलाफ भ्रष्टाचार, पानी की कमी, टैंकर माफिया और यमुना की सफाई जैसे मुद्दे उठाए थे।

केजरीवाल ने शीला दीक्षित को लेकर यह परसेप्शन बनाया था, कि उनके घर में लग्जरी चीजें हैं, 10 से ज्यादा एसी है और वे एक महारानी की तरह रहती हैं और टैक्सपेयर्स के पैसे से सुख-सुविधाएं भोग रही हैं। कुछ ऐसा ही कैंपेन बीजेपी ने केजरीवाल के खिलाफ चलाया था, और शीश महल का मुद्दा बीजेपी के लिए फायदा के रहे।

आज का राशिफल

मेष

आज लाभ होगा और आपको दूसरों की मदद करने से खुशी मिलेगी। दिन परोपकार के काम में बीतेगा और आपको धन सम?मान के मामले में लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकते हैं। इन बदलावों से आपके साथी परेशान हो सकते हैं। लेकिन आप अपने अच्छे व्यवहार से माहौल ठीक कर लेंगे।

वृष

आज लाभ के योग बने हैं और आपका दिन परिवार के लोगों के साथ शानदार बीतेगा। दोपहर तक कोई अच्छी खबर मिल सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शाम को किसी खास मेहमान का आना हो सकता है। रात में किसी शुभ कार्यक्रम में शामिल होने से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

मिथुन

आज दिन लाभ और सफलता से भरा होगा। किसी कीमती चीज या फिर संपत्ति को पाने की चाहत पूरी हो सकती है। आपको पिता का आशीर्वाद और बड़े अधिकारियों की कृपा प्राप?त होगी और आपके लिए तरक?की के योग भी बने हैं। काम बहुत रहेगा।

कर्क

आज अचानक धन लाभ हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार में तरक्की होगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको जल्दबाजी में भावुक होकर कोई फैसला न लेने की सलाह है। ऐसा फैसला बाद में आपको पछताना पड़ सकता है।

सिंह

आज राजनीति में बड़ी सफलता मिल सकती है। बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी करेंगे। प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ेंगे। रुका हुआ काम पूरा होगा आपको सेहत की वजह से काफी भागदौड़ करनी पड़ सकती है। शाम से रात तक दोस्तों के साथ अच्छा समय बीतेगा।

कन्या

आज तरक्की का दिन है। प्रभाव और प्रताप में वृद्धि होगी। शाम के समय कुछ अनचाहा खर्च आ सकता है, लेकिन मजबूरी में करना पड़ेगा। धन और सम्मान में वृद्धि होगी और रुके हुए काम पूरे होंगे। योजनाएं सफल होंगी और भाग्य का पूरा साथ मिलेगा।

तुला

आज दिन सफलता से भरा होगा और आपके लिए तरक?की के योग बने हैं। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। किसी रचनात्मक काम में मन लगेगा। मुश्किल समय में गुस्से पर काबू रखें। घर की समस्याएं सुलझ जाएंगी। सरकार से मदद मिल सकती है। सूर्यास्त के समय अचानक धन लाभ हो सकता है।

वृश्चिक

आज दिन मिलाजुला रहेगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं, जिससे चिंता हो सकती है। लेकिन शाम को कोई खुशखबरी मिल सकती है। रात में किसी मांगलिक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा। धन और सम्मान में वृद्धि होगी और रुके हुए काम पूरे होंगे।

धनु

आज दिन लाभदायक है। सामाजिक गतिविधियों में मन लगेगा और सम्मान में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं में थोड़ी कमी आ सकती है। अपने मन की बात किसी से जल्दी न कहें, इससे रुका हुआ धन मिल सकता है। सेहत का ध्यान रखें और खानपान पर नियंत्रण रखें। लापरवाही से बचें।

मकर

आज ग्रहों की स्थिति शुभ है। लाभ और तरक्की के योग हैं। निर्णय लेने की क्षमता से लाभ होगा और सम्मान बढ़ेगा। कोई पुराना विवाद सुलझ सकता है। धन लाभ होगा। शाम से रात तक धार्मिक कार्यों में समय बीतेगा और मन प्रसन्न रहेगा। आपका दिन शुभ होगा, मेहनत सफल होगी और आपको शेयर बाजार में पैसा लगाने से बेहतर रिटर्न मिलेगा।

कुंभ

आज करियर में लाभ और तरक्की वाला है। आगे बढ़ने के नए रास्ते खुलेंगे। नई योजनाओं से भविष्य में लाभ होगा। आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी और अच्छे कर्मों से परिवार का नाम रोशन होगा। बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। शाम का समय परिवार के साथ आनंद और तरक्की से भरा होगा। सैर-सपाटे में मन लगेगा।

मीन

आज सफलता मिलेगी और भाग्य साथ देगा। मानसिक शांति मिलेगी और रुके हुए काम में तरक्की होगी। प्रमोशन के योग हैं। दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में कामयाब रहेंगे। रात में अचानक मेहमान आ सकते हैं, जिससे काम बढ़ सकता है। आपको पैसों के मामले में कहीं से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है।

संक्षिप्त समाचार

वैष्णो देवी मंदिर के आसपास शराब और मांसाहार पर पाबंदी 2 महीने बढ़ाई

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर जाने वाले तीर्थयात्रियों के लिए जरूरी खबर है। आधार शिविर कटरा में शराब और मांसाहार की बिक्री और इस्तेमाल पर लगे प्रतिबंध को 2 महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कटरा से त्रिकुटा पर्वत स्थित मंदिर तक जाने वाले 12 किलोमीटर लंबे मार्ग और आसपास के क्षेत्रों में यह प्रतिबंध लागू रहेगा। आदेश जारी होने की तारीख से दो महीने तक यह पाबंदी प्रभावी रहेगी। कटरा के उप-मंडलीय मजिस्ट्रेट पियूष धोतरा ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत यह प्रतिबंध लागू किया है। अधिकारियों ने बताया कि कटरा से मंदिर मार्ग तक के अलावा मार्ग के दोनों ओर 2 किलोमीटर के दायरे में आने वाले गांवों जैसे अरली, हंसाली और मटयाल में शराब और मांसाहार पर रोक रहेगी। इसी तरह, कटरा-टिकरी रोड के दोनों ओर 200 मीटर के दायरे में स्थित चंबा, सेरली और भगता गांवों में पाबंदी लागू रहेगी। कटरा-जम्मू रोड के दोनों ओर 200 मीटर तक के क्षेत्र में स्थित कुंद्रोरियन, कोटली बजालियान, नोमाइन और मघाल गांवों में भी यह प्रतिबंध लागू रहेगा। गौरतलब है कि श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने वैष्णो देवी मंदिर में वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग तीर्थयात्रियों के लिए हेलीकॉप्टर कोटा सुविधा की घोषणा की है। एसएमवीडीएसबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंशुल गर्ग ने बताया कि तीर्थयात्री सेवाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से यह फैसला लिया गया। उन्होंने बताया कि बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट पर कोटा उपलब्ध होगा। गर्ग ने कहा कि बोर्ड समय-समय पर नई सुविधाएं शुरू करके और मौजूदा बुनियादी ढांचे को उन्नत करके तीर्थयात्रा के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहा है। उन्होंने कहा, 'वरिष्ठ नागरिक मंच की ओर से लंबे समय से की जा रही मांग के जवाब में यह सुविधा शुरू की गई है। मंच ने हाल ही में उच्च स्तरीय समिति के साथ बैठक करके अलग हेलीकॉप्टर बुकिंग कोटा की मांग की थी।

ऑनलाइन ली पिस्तौल बनाने की ट्रेनिंग, 10वीं के स्टूडेंट ने घर पर ही खोल रखी थी हथियारों की फैक्ट्री

चंडीगढ़, एजेंसी। जालंधर में कमिश्नरेट पुलिस ने हैरान कर देने वाले मामले का खुलासा किया है। क्राइम ब्रांच टीम ने 10वीं कक्षा में पढ़ने वाले एक नाबालिग को देसी पिस्तौल के साथ गिरफ्तार किया है। वह अपने घर में ही देसी कट्टे बनाने का धंधा करता था और फैक्ट्री खोल रखी थी। उसने पिस्तौल बनाने की ट्रेनिंग ऑनलाइन ली थी और लम्बे समय से इस काम में था। उस से 10 देसी पिस्तौल बरामद हुई हैं। जानकारी के अनुसार लड़का पिस्तौल बनाने की ट्रेनिंग ऑनलाइन ली थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट समेत कई धाराओं में केस दर्ज किया है। उसे जल्द ही कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया जाएगा। पकड़ा गया नाबालिग पहचान जालंधर के कोट मोहल्ला का रहने वाला है। जालंधर कमिश्नरेट पुलिस के स्पेशल सेल के इंचार्ज रविंदर कुमार ने बताया कि हमें सूचना मिली थी कि शहर का एक युवक अवैध देसी कट्टे बनाने का धंधा करता है और वह शहर में इसकी सप्लाई करता है। इस सूचना के आधार पर पुलिस ने जाल बिछाया और जालंधर के कोट मोहल्ला निवासी नाबालिग छात्र को गिरफ्तार कर लिया। नाबालिग लंबे समय से इस धंधे में संलिप्त है। पुलिस ने 10 देसी पिस्तौल, एक लोहा काटने वाली मशीन, एक ड्रिल मशीन, पिस्तौल बनाने में इस्तेमाल होने वाले अन्य उपकरण और बिना नंबर प्लेट की एक्टिवा बरामद की है। उसने पिस्तौल बनाने की ट्रेनिंग ऑनलाइन ली थी।

कांग्रेस की सबसे बड़ी प्रॉब्लम ही राहुल गांधी हैं, जब तक वे हैं, कांग्रेस का कुछ नहीं हो सकता- आचार्य प्रमोद कृष्णम

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली विधानसभा में खाता खोलने में भी नाकाम रही कांग्रेस को लेकर पूर्व नेता ही तंज कस रहे हैं। पार्टी के खराब प्रदर्शन के तार वायनाड सांसद राहुल गांधी से जोड़े रहे हैं। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कांग्रेस नेताओं पर सनातन धर्म के विरोधी होने के आरोप लगाए हैं। आचार्य कृष्णम को कांग्रेस ने बीते साल फरवरी में ही पार्टी से बाहर कर दिया था। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में रविवार को आचार्य कृष्णम ने कहा, कांग्रेस की सबसे बड़ी प्रॉब्लम ही राहुल गांधी हैं। जब तक राहुल गांधी हैं, कांग्रेस का कुछ नहीं हो सकता। कांग्रेस को लाया नहीं जा सकता और राहुल गांधी को कांग्रेस से हटाया नहीं जा सकता। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और कांग्रेस की बर्बादी इसलिए हो रही है, क्योंकि राहुल गांधी जैसा अपरिपक्व नेतृत्व है। उन्होंने कांग्रेस सांसद की टीम में काम करने वालों को सनातन का विरोधी करार दिया है। आचार्य ने कहा, और राहुल गांधी के साथ में जो टीम है, वो नौसीखियों की टीम है, सनातन विरोधियों की टीम है। सनातन का विरोध जो करेगा, वह भारत की राजनीति में प्रासंगिक नहीं रह पाएगा।

सुपर फूड मखाना ग्लोबल तो बन गया पर खाली हाथ हैं किसान

नईदिल्ली, एजेंसी। बीते सालों में बिहार का मखाना बड़ी तेजी से आम लोगों से लेकर कुलीन लोगों तक के खाने में शामिल हुआ है.भारत से बाहर भी इसे सुपरफूड का दर्जा मिल रहा है लेकिन इसे उगाने वाले किसानों को उतना फायदा नहीं मिला.जेन-जी का मनपसंद स्नैक्स और दुनिया भर में सुपर फूड बना फॉक्सनट या मखाना इस बार भारत के बजट में अहम स्थान पर रहा.प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट और कई पोषक तत्वों से भरपूर मखाना बेहतर इम्युनिटी बूस्टर भी है, जिसमें नाम मात्र की वसा होती है.दुनिया भर में मखाने की बढ़ी मांगभारत मखाने का सबसे बड़ा उत्पादक देश है.घरेलू तथा वैश्विक बाजार में इसकी मांग दिनों-दिन बढ़ती जा रही है.फिलहाल बिहार का मखाना अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, इंग्लैंड, कनाडा, फ्रांस और खाड़ी देशों में निर्यात किया जाता है.इसका बोटैनिकल नेम यूरीएल फेरॉक्स है.देश का 80 प्रतिशत मखाना बिहार के मिथिला और कोसी-सीमांचल क्षेत्र के करीब 40 हजार हेक्टेयर इलाके में होता है.अब इसकी खेती उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ में भी हो रही है.खेती के लिए ज्यादातर वेटलैंड (जल-जमाव वाले क्षेत्र) का इस्तेमाल होता है.दरभंगा के मखाना किसान श्याम सहनी बाते हैं कि दो से तीन-चार फीट की गहराई में जमा पानी इसकी खेती के लिए

उपयुक्त होता है.जिस तरह धान की रोपाई के लिए उसके बीज (छोटे पौधे) तैयार किए जाते हैं, उसी तरह नवंबर के महीने में मखाने की नर्सरी तैयार की जाती है.दिसंबर से अप्रैल के बीच इसकी बुआई होती है, जिसमें पौधे को मिट्टी में दबाया जाता है.इसके पत्ते प्लेट की तरह पानी की सतह पर रहते है.रोपाई के करीब दो महीने बाद बैंगनी रंग के फूल पौधों पर आते हैं.करीब 40-50 दिन बाद फल पक कर फूटते हैं और मखाना का बीज नीचे बैठने लगता है.इन्हीं बीजों को चुन कर निकाला जाता है. जुलाई तक फसल तैयार हो जाती है.बीज को सुखाने के बाद सफाई-छंटाई कर भूना जाता है और फिर उसे तोड़ कर मखाना निकाला जाता है.इसके बाद साइज के अनुसार उसकी ग्रेडिंग की जाती है.बिहार में 25,000 किसान उगाते हैं मखानाएक आंकड़े के मुताबिक राज्य के दस जिलों के 3,393 गांवों में करीब 25000 किसान मखाने की खेती से जुड़े हैं.अनुमान के मुताबिक हर साल बिहार में 50-60 हजार टन मखाना बीज और करीब 23-25 हजार मीट्रिक टन मखाना का उत्पादन किया जा रहा है.अमूमन, एक किलो मखाना बीज से 400 ग्राम तक ही मखाना निकल पाता है.बिहार में पैदा होने के बावजूद यहां इसकी कीमत 1,000 से 1,400 रुपये प्रति किलोग्राम तक रहती है.अंतरराष्ट्रीय बाजार में यह आठ से दस हजार रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिकता है.अगस्त, 2022 में मिथिलांचल मखाना को जीआई (जियोग्राफिकल इंडिकेशन) टैग मिला था.मखाना के बढ़ते बाजार पर बिहार राज्य मत्स्यजीवी सहकारी संघ के प्रबंध निदेशक ऋषिकेश कश्यप कहते हैं, मखाना के उत्पादों की कई किस्में बाजार में उपलब्ध है.मखाना खीर, मखाना मोमो, चाट, इडली, कटलेट, समोसा, रोस्टेड मखाना, मखाना कुल्फी और बर्फी को लोग काफी पसंद कर रहे हैं.बिहार के अलावा दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में भी इसकी मांग बढ़ गई हैजीआई टैग से कितना फायदामखाना को जीआई टैग मिलने से उम्मीद बंधी थी कि किसानों को मार्केटिंग में फायदा होगा और उनकी अर्थव्यवस्था सुधरेगी.राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मखाना की विशेष ब्रांडिंग से उन्हें उपज का अधिकतम मूल्य मिलने में मदद मिलेगी.हालांकि स्थिति यह है कि किसानों को आज भी मखाने की फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है.बड़े व्यापारी और बिचौलिए ही इसका मूल्य तय करते हैं.पत्रकार अमित झा बताते हैं, मखाना उपजाने वाले किसान बमुश्किल मुनाफा कमा पाते हैं.प्रसंस्करण, भंडारण और सप्लाई चेन की दिक्कतों की वजह से उन्हें पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल पाता है. फिर, एमएसपी वाले खाद्य पदार्थों की सूची में भी मखाना शामिल नहीं हैकिसान से तीन से पांच सौ रुपये प्रति क्विंटल के दर से खरीद कर बिचौलिए व व्यापारी इसे पांच से छह हजार रुपये प्रति क्विंटल तक बेच देते हैं.जब तक सरकार इसकी एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य तय नहीं करेगी, तब तक किसान के लिए नुकसान का खतरा बना ही रहेगा.बिहार सरकार राज्य में इसकी खेती को बढ़ावा देने के लिए बागवानी मिशन के तहत मखाना विकास योजना चला रही है.इसके जरिए 75 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जा रही है.कितना कारगर होगा।

एकनाथ शिंदे का बड़ा दावा- आप के 15 उम्मीदवारों ने मांगा था 'धनुष-बाण' चुनाव चिह्न

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में इलेक्शन लड़ने के लिए आम आदमी पार्टी के 15 उम्मीदवारों ने उनसे उनकी पार्टी का चुनाव चिह्न मांगा था, लेकिन उन्होंने युति धर्म के कारण मना कर दिया। महाराष्ट्र की महायुति गठबंधन सरकार में शामिल शिवसेना दिल्ली विधानसभा चुनाव जीतने वाली भारतीय जनता पार्टी की सहयोगी है। एकनाथ शिंदे ने कहा, 'आप के कुल 15 उम्मीदवारों ने मुझसे संपर्क किया था। मुझे लगा कि अगर धनुष और बाण चुनाव चिह्न उन्हें मिल गया तो वोट भाजपा और शिवसेना के बीच बंट जाएंगे, जिससे अन्य दलों को फायदा होगा। इसलिए मैंने मना कर दिया।' शिवसेना प्रमुख ने कहा कि उन्हें युति धर्म (गठबंधन के प्रति प्रतिबद्धता) का सम्मान करना था। डिप्टी सीएम शिंदे का रविवार को जन्मदिन था और वह 61 वर्ष के हो गए हैं।

भाजपा उम्मीदवारों के लिए प्रचार करने को कहा : उपमुख्यमंत्री शिंदे ने ठाणे शहर में एक कार्यक्रम में कहा, 'मैंने अपने सांसदों से दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों के लिए प्रचार करने को कहा था।' शिंदे ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में पार्टी के प्रदर्शन का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटियों को दिया। उन्होंने कहा कि झूठ की हार हुई है। महाराष्ट्र के बाद अब दिल्ली के मतदाताओं ने भी भाजपा के नेतृत्व में अपना विश्वास जताया है। आम आदमी पार्टी पर निशाना साधते हुए शिंदे ने कहा कि दिल्ली के विकास में बाधाएं दूर हो गई हैं। मतदाताओं ने केजरीवाल के नेतृत्व वाली पार्टी को भी सबक सिखाया, जिसने संविधान के खतरे में होने का झूठा दावा किया था। उन्होंने कहा कि यह मोदी की गारंटी का जादू है। झूठ की हार हुई है और मतदाता सत्य के साथ खड़े हैं।

महाराष्ट्र में 5 लाख लाडली बहनें अयोग्य घोषित, क्या पैसे वापस लेगी सरकार

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री लाडकी बहिन योजना के तहत 5 लाख महिलाओं को अयोग्य घोषित कर दिया है। यह महिलाएं या तो अन्य सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त कर रही थीं या वे योजना की पात्रता मानदंडों को पूरा नहीं करती थीं। हालांकि, महिला और बाल विकास मंत्री आदिति तटकरे ने स्पष्ट किया कि पिछले छह महीनों में इन महिलाओं के बैंक खातों में जो धनराशि जमा की गई थी, वह वापस नहीं ली जाएगी। उन्होंने कहा, जो महिलाएं अयोग्य घोषित की गई हैं, उन्हें जनवरी 2025 से योजना का लाभ नहीं मिलेगा।न जो धनराशि जुलाई 2024 से दिसंबर 2024 के बीच उनके खातों में जमा हुई है, उसे वापस नहीं लिया जाएगा। यह कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के तहत सही नहीं होगा। सूत्रों के अनुसार, जुलाई 2024 से दिसंबर 2024 के बीच इन 5 लाख महिलाओं के खातों में कुल 450 करोड़ रुपये से अधिक जमा किए गए हैं। इस योजना के तहत पात्र महिलाओं को प्रति माह 1,500 रुपये की राशि दी जाती है। अयोग्य घोषित की गई महिलाओं में से 2.30 लाख महिलाएं संजय गांधी निराधार योजना के तहत लाभ प्राप्त कर रही हैं।

चंद्रयान-3 जिस शिव शक्ति प्वाइंट पर हुआ लैंड, वैज्ञानिकों ने उसे लेकर किया चौंकाने वाला दावा

बेंगलुरु, एजेंसी। भारत का चंद्रयान-3 स्पेसक्राफ्ट साल 2023 में चंद्रमा के शिव शक्ति प्वाइंट पर लैंड हुआ था। अब वैज्ञानिकों का कहना है कि चांद के दक्षिणी पोल की यह सतह करीब 3.7 बिलियन (3 अरब से ज्यादा) साल पुरानी है। स्टडी के दौरान हाई-रिजोल्यूशन वाले रिमोट सेंसिंग डेटासेट्स की मदद ली गई। इसमें वैज्ञानिकों की एक टीम लगी हुई थी जिसमें बेंगलुरु स्थित इसरो के इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स सिस्टम सेंटर, अहमदाबाद स्थित फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी और चंडीगढ़ की पंजाब यूनिवर्सिटी के एक्सपर्ट्स शामिल थे। इन लोगों ने चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट यानी शिव शक्ति प्वाइंट का मैप तैयार किया। अध्ययन के मुताबिक, चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। जियोपॉलिटिकल मैप में बताया गया कि हाई-रिलीफ रग्ड एरिया, स्मूथ प्लेन्स और लो-रिलीफ स्मूथ प्लेन्स शामिल हैं। स्टडी पेपर में टीम की ओर से यह जानकारी दी गई, जो कि साइंस डायरेक्ट जर्नल में प्रकाशित है। इसमें अनुमान लगाया गया कि लैंडिंग साइट 3.7 बिलियन वर्ष पुरानी है। जानना दिलचस्प है कि इसी कालखंड में पृथ्वी पर सबसे प्राचीन माइक्रोबियल जीवन विकसित हुआ था।

शिव शक्ति प्वाइंट की उम्र का कैसे चला पता : रिपोर्ट के मुताबिक, स्टडी के दौरान लूनर रिकॉनिसेंस ऑर्बिटर के वाइड-एंगल कैमरा और टेरेन कैमरा का

इस्तेमाल किया गया। इसके जरिए पहले क्रेटर और चट्टानों का अध्ययन किया गया। 25 क्रेटर्स (500-1,150 मीटर व्यास के) के एनालिसिस से पता चला कि लैंडिंग साइट की उम्र 3.7 अरब साल होगी। इसरो के वैज्ञानिक बताते हैं कि चंद्रमा की सतह माइक्रो-मेटियोराइट बमबारी और तापीय उतार-चढ़ाव के कारण बदलती रहती है। लाखों बरस बीत जाने के बाद ये चट्टानें टूटकर रेगोलिथ में बदल गई हैं।

आखिर कितना खास रहा मिशन चंद्रयान-3 : यह जानकारी ऐसे समय सामने आई है जब भारत चंद्रयान-4 मिशन की तैयारी में है। साल 2027 में चंद्रयान-4 लॉन्च होगा, जिसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह से चट्टानों के नमूने एकत्र कर पृथ्वी पर लाना है। मालूम हो कि चंद्रयान-3 इसरो का तीसरा चंद्र अन्वेषण मिशन रहा।

यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरने वाला पहला मिशन था। चंद्रयान-3 को 14 जुलाई, 2023 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था। 23 अगस्त, 2023 को चंद्रयान-3 का विक्रम लैंडर चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने में सफल रहा। भारत के चंद्रयान-3 अभियान पर 600 करोड़ रुपये की लागत आई थी जबकि अन्य देशों ने चंद्रमा पर अपने अंतरिक्ष यान भेजने पर अरबों डॉलर खर्च किए हैं।

तिरुपति मंदिर के लड्डू में चर्बी का मामला, सीबीआई ने 4 लोगों को किया गिरफ्तार

तिरुपति, एजेंसी। सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (सीबीआई) के नेतृत्व में एक विशेष जांच दल ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में दिए जाने वाले तिरुपति लड्डुओं में कथित मिलावट के सिलसिले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि गिरफ्तार लोगों की पहचान भोले बाबा डेयरी के पूर्व निदेशकों विपिन जैन और पोमिल जैन, वैष्णवी डेयरी के अपूर्व चावड़ा और एआर डेयरी के राजू राजशेखरन के रूप में हुई है।

एक अधिकारी ने रविवार देर रात 'पीटीआई-भाषा' से कहा, चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। दो व्यक्ति (बिपिन जैन और पोमी जैन) भोले बाबा डेयरी से हैं, अपूर्व चावड़ा 'वैष्णवी डेयरी' और (राजू) राजशेखरन 'एआर डेयरी' से जुड़े हैं। सूत्रों के अनुसार, एसआईटी जांच में घी आपूर्ति के हर चरण में गड़बड़ियां होने का पता चला है, जिसके कारण गिरफ्तारियां की गईं। उन्होंने आरोप लगाया कि वैष्णवी डेयरी के अधिकारियों ने मंदिर को घी की आपूर्ति

करने के लिए एआर डेयरी के नाम से निविदा हासिल की और वह निविदा प्रक्रिया में हेराफेरी करने के लिए फर्जी रिकॉर्ड बनाने में भी शामिल रही।

सूत्रों ने बताया कि एसआईटी ने खुलासा किया कि वैष्णवी डेयरी ने झूठा दावा किया था कि वह भोले बाबा डेयरी से घी प्राप्त करती थी, जबकि अधिकारियों ने पाया कि भोले बाबा डेयरी के पास मंदिर बोर्ड तिरुमला तिरुपति देवस्थानम की मांग को पूरा करने की क्षमता नहीं थी।

सीबीआई ने उच्चतम न्यायालय के आदेश पर, तिरुपति लड्डू बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए पिछले वर्ष नवंबर में पांच सदस्यीय एसआईटी का गठन किया था। उन्होंने बताया कि टीम में केंद्रीय एजेंसी के दो अधिकारी, आंध्र प्रदेश पुलिस के दो अधिकारी और भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का एक अधिकारी शामिल है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता सुब्रमण्यम स्वामी और वाईएसआरसीपी (युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी) के राज्यसभा सदस्य वाई वी सुब्बा रेड्डी सहित अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई के बाद शीर्ष अदालत ने पिछले साल चार अक्टूबर को अपने आदेश में कहा था कि लड्डू बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोप की जांच एसआईटी करेगी और इसकी निगरानी सीबीआई निदेशक करेंगे। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने सितंबर में आरोप लगाया था कि राज्य में वाई एस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली पिछली सरकार के दौरान तिरुपति के लड्डू तैयार करने में पशु चर्बी का इस्तेमाल किया गया था। नायडू के इस बयान से बड़ा राजनीतिक विवाद पैदा हो गया था।

कौन बनेगा हिंसा की आग में झुलसे मणिपुर का मुख्यमंत्री , एन बीरेन सिंह के बाद रेस में ये नाम आगे

इम्फाल, एजेंसी। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह पद से इस्तीफा दे चुके हैं। हालांकि, नई व्यवस्था के आने तक वह ही पद पर बने रहेंगे। अचानक हुए इस फैसले के बाद दिल्ली में पूर्वोत्तर राज्य के नए सीएम को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। हालांकि, अब तक आलाकमान की तरफ से कोई फैसला नहीं लिया गया है। यह घटनाक्रम ऐसे समय पर हुआ है, जब राज्य कुकी और मैतेई समुदाय के बीच जारी खूनी संघर्ष से जूझ रहा है।

क्यों दिया इस्तीफा : प्रदेश इकाई में जारी खींचतान के बीच सिंह का रविवार को इस्तीफा आया है। यह घटनाक्रम सिंह के दिल्ली से लौटने के कुछ ही घंटों बाद हुआ है। पीटीआई भाषा को एक सूत्र ने बताया कि सिंह भाजपा विधायकों के बीच भी समर्थन खो रहे हैं, जिनमें से कई ने दिल्ली में पार्टी नेताओं से मुलाकात कर उनके पद पर बने रहने पर अपनी नाखुशी जाहिर की थी। राज्य विधानसभा का सत्र 10 फरवरी से शुरू होने वाला है और इस बात को लेकर चिंता थी कि कुछ पार्टी विधायक अपने ही नेतृत्व को निशाना बनाकर सरकार के लिए असहज स्थिति पैदा कर सकते हैं।

सिंह ने राज्यपाल को लिखे अपने पत्र में कहा, अब तक मणिपुर के लोगों की सेवा करना मेरे लिए सम्मान की बात रही है। मैं प्रत्येक मणिपुरी के हितों की रक्षा के लिए समय पर की गई कार्रवाई, विकास

कार्यों और विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए केंद्र सरकार का बहुत आभारी हूं। पत्र में कहा गया है, आपके कार्यालय के माध्यम से केंद्र सरकार से मेरा विनम्र अनुरोध है कि इसे जारी रखा जाए। मैं इस अवसर पर उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कार्यों को गिनाना चाहता हूं... मणिपुर की क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना, जिसका हजारों वर्षों से समृद्ध और विविध सभ्यतागत इतिहास रहा है। अभी यह साफ नहीं है कि भाजपा नया मुख्यमंत्री नियुक्त करेगी या नहीं। भाजपा के शीर्ष नेता संबित पात्रा मणिपुर में डेरा डाले हुए हैं। कहा जा रहा है कि इससे दिल्ली नेतृत्व को राज्य के लिए नया कप्तान खोजने का समय मिल गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रेस में ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री युमनाम खेमचंद सिंह, वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री टी विश्वजीत सिंह और विधानसभा स्पीकर टी सत्यब्रत सिंह का नाम आगे चल रहा है।

600 कमांडो और 15 दिन की प्लानिंग; छत्तीसगढ़ में बड़े नक्सल ऑपरेशन को ऐसे दिया अंजाम

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में नक्सलियों के खिलाफ एक बड़े अभियान में सुरक्षाबलों ने रविवार को भीषण मुठभेड़ के दौरान 11 महिलाओं समेत 31 नक्सलियों को मार गिराया। इस मुठभेड़ में दो सुरक्षाकर्मी भी शहीद हो गए तथा दो अन्य घायल हो गए। इस दौरान सुरक्षा बलों ने भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियारों का जखीरा भी बरामद किया। इस घटना के साथ ही इस साल अब तक राज्य में अलग-अलग मुठभेड़ों में सुरक्षाबलों ने 81 नक्सलियों को मार गिराया है।

हिन्दुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, इस मामले से परिचित अधिकारियों ने बताया कि स्थानीय लोगों और सरेंडर करने वाले माओवादियों ने प्रशिक्षित कमांडो की 600 सदस्यीय टीम बनाई, जिसने बस्तर क्षेत्र के जंगलों में माओवादियों के खिलाफ सबसे घातक अभियानों में से एक को अंजाम दिया और रविवार सुबह 31 नक्सलियों को मार गिराया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस ऑपरेशन को सुरक्षा बलों के लिए एक 'बड़ी उपलब्धि' बताया है। इस साल अब तक छत्तीसगढ़ में अलग-अलग मुठभेड़ों में 81 माओवादियों को ढेर किया गया है, जबकि 2024 में यह संख्या 219 थी। अधिकारियों ने बताया कि छत्तीसगढ़ पुलिस के

जिला रिजर्व गार्ड, स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और बस्तर के लड़ाकों के जवानों के साथ पिछले 15 दिन से अधिक समय से ऑपरेशन की योजना बनाई जा रही थी, जो गुरुवार सुबह अलग-अलग रास्तों से इंद्रावती नेशनल पार्क क्षेत्र में दाखिल हो रहे थे।

कमांडो का एक दल महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले से उग्रवादियों से प्रभावित जंगलों में घुसा और राज्य पुलिस ने इलाके में डेरा डाले माओवादी कैडरों तक उनकी आवाजाही में मदद की। बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पी ने बताया कि यह मुठभेड़ मांडेड और फरसेगढ़ पुलिस थाना क्षेत्रों की सीमा पर एक जंगली पहाड़ी पर हुई।

ऑपरेशन 7 फरवरी को शुरू हुआ था, लेकिन रविवार को सुबह करीब 8 बजे इंद्रावती नेशनल पार्क के एक हिस्से में पहाड़ी पर भीषण गोलीबारी शुरू हो गई। उन्होंने बताया कि शाम करीब 4 बजे तक रुक-रुक कर गोलीबारी चलती रही। मांडेड एरिया कमेटी के दक्षिण में इंद्रावती नदी बहती है, जो महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ को विभाजित करती है। जिस इलाके में मुठभेड़ हुई, वह सीपीआई (माओवादी) के पश्चिम बस्तर डिवीजन के अंतर्गत आता है, जहां सुरक्षा बलों की मौजूदगी सबसे कम है। यहां सुरक्षा बलों के कुछ ही कैंप हैं। एडीजी (नक्सल ऑपरेशन) विवेकानंद सिन्हा ने कहा, हम पिछले 15 दिनों से ऑपरेशन की योजना बना रहे थे और यह सफल रहा। मुठभेड़ के बाद मौके से भारी मात्रा में ऑटोमेटिक हथियार बरामद किए गए, जिसके बारे में अधिकारियों ने कहा कि यह बैठक के लिए शीर्ष माओवादी नेताओं की मौजूदगी का संकेत है। अधिकारियों ने बताया कि मांडेड एरिया कमेटी तेलंगाना, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के करीब है।

मैथ्यू ब्रीत्जके ने अपने पहले ही मैच में रचा इतिहास

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान में खेली जा रही ट्राई सीरीज का दूसरा मैच न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका के बीच गद्दाफी स्टेडियम में खेला गया. इस भिड़ंत में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी थी और जब अफ्रीकी टीम पहले बैटिंग करने आई तो उसने 26 वर्षीय मैथ्यू ब्रीत्जके को डेब्यू का अवसर दिया. मैथ्यू ने अपने पहले ही मैच में इतिहास रच डाला है क्योंकि वो डेब्यू वनडे मैच में 150 रन बनाने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बन गए हैं.

मैथ्यू ब्रीत्जके ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 148 गेंदों में 150 रन की पारी खेली. इस पारी में उन्होंने 11 चौके और 5 छक्के लगाए. उनसे पहले वनडे डेब्यू मैच में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर बनाने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के डेसमोंड लियो हेन्स के नाम था, जिन्होंने साल 1978 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 148 रन बनाए थे.

20 गेंद में बनाए 49 रन

मैथ्यू ब्रीत्जके ने बहुत धीमे अंदाज में शतकीय पारी खेली थी. वो इतना धीरे खेल रहे थे कि उनका शतक 128 गेंदों में पूरा हुआ, लेकिन जैसे ही सेंचुरी पूरी हुई वैसे ही यह 26 वर्षीय बल्लेबाज तूफानी मोड में आ गया. ब्रीत्जके ने अगली 20 गेंदों में तेजतर्रार बैटिंग करते हुए 49 रन ठोक डाले. इस तरह उनकी पारी 148 गेंदों में 150 के स्कोर पर समाप्त हुई. ब्रीत्जके ने इस मैच में वियान मुल्डर के साथ मिलकर 131 रनों की साझेदारी की, इसके अलावा उन्होंने जेसन स्मिथ के साथ मिलकर भी 93 रनों की पार्टनरशिप की.

वनडे डेब्यू में सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर

मैथ्यू ब्रीत्जके - 150 रन बनाम न्यूजीलैंड
डेसमोंड हेन्स - 148 रन बनाम ऑस्ट्रेलिया
रहमनुल्लाह गुरबाज - 127 रन बनाम आयरलैंड
कॉलिन इंग्रम - 124 रन बनाम जिम्बाब्वे
मार्क चैपमैन - 124 रन बनाम यूएई

नेशनल गेम्सः

ज्योति याराजी और तेजस ने बाधा दौड़ स्पर्धा में लगातार तीसरा स्वर्ण पदक जीता

देहरादून, एजेंसी। गत एशियाई चैंपियन और 2023 में हुए हांगझोउ एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता 25 साल की याराजी ने फाइनल में 13.10 सेकेंड के समय के साथ 13.22 सेकेंड के अपने पिछले राष्ट्रीय खेलों के रिकॉर्ड में सुधार किया जो उन्होंने 2023 में बनाया था।

स्टार महिला धावक आंध्र प्रदेश की ज्योति याराजी और तेजस शिरसे ने देहरादून में जारी राष्ट्रीय खेलों की एथलेटिक्स प्रतियोगिता के दूसरे दिन खेलों के रिकॉर्ड समय के साथ क्रमशः महिला 100 मीटर बाधा दौड़ और पुरुष 110 मीटर बाधा दौड़ में लगातार तीसरे स्वर्ण पदक जीते। अपने स्पर्धाओं में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक शिरसे और याराजी ने इससे पहले गुजरात और गोवा में हुए पिछले दो राष्ट्रीय खेलों में भी स्वर्ण पदक जीते थे।

गत एशियाई चैंपियन और 2023 में हुए हांगझोउ एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता 25 साल की याराजी ने फाइनल में 13.10 सेकेंड के समय के साथ 13.22 सेकेंड के अपने पिछले राष्ट्रीय खेलों के रिकॉर्ड में सुधार किया जो उन्होंने 2023 में बनाया था। याराजी का राष्ट्रीय रिकॉर्ड 12.78 सेकेंड है। पश्चिम बंगाल की मौमिता मंडल ने 13.36 सेकेंड के साथ रजत पदक अपने नाम किया, जबकि तमिलनाडु की नित्या रामराज ने 13.60 सेकेंड के समय के साथ कांस्य पदक जीता।

22 साल के शिरसे ने 13.65 सेकेंड के समय के साथ 13.71 सेकेंड के अपने राष्ट्रीय खेलों के पिछले रिकॉर्ड में सुधार करते हुए स्वर्ण पदक जीता। उनका राष्ट्रीय रिकॉर्ड 13.41 सेकेंड का है जो उन्होंने पिछले साल बनाया था। तमिलनाडु के मानव राजनारायणन ने 14.03 सेकेंड के साथ रजत जबकि केरल के मुहम्मद लजान ने 14.23 सेकेंड के समय के साथ कांस्य पदक जीता।

टेनिसः

सानिया मिर्जा को आदर्श मानती हैं माया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टेनिस में बीते कुछ दिनों से एक नाम लगातार सुर्खियों में है। नाम है माया रामेश्वरन। 15 साल की इस खिलाड़ी ने अपने खेल से सनसनी मचाई है। अपनी आदर्श सानिया मिर्जा की तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम बनाने का सपना देखने वाली माया के सफर की शुरुआत शानदार रही है।

मुंबई ओपन में रचा इतिहास

माया ने मुंबई ओपन 125 के सेमीफाइनल में जगह बनाई। माया राजेश्वरन का स्वप्निल सफर शनिवार को जिल टीचमैन के खिलाफ सीधे सेटों में हार के साथ समाप्त हो गया। राजेश्वरन का टूर्नामेंट में सफर प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने इटली की वर्ल्ड नंबर 264 निकोल फोसा ह्यूर्गो को तीन सेट के चुनौतीपूर्ण मैच (6-3, 3-6, 6-0) में हराया। इसके बाद उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की वर्ल्ड नंबर 434 जेसिका फेला को 7-6(9), 1-6, 6-4 के स्कोर से हराया। इस टूर्नामेंट में वाइल्ड कार्ड एंट्री मिली थी। इस टूर्नामेंट में उन्होंने इस प्रदर्शन के साथ ही उन्होंने डबल्यूटीए पॉइंट हासिल किया है। वह ऐसा करने वाली भारत की सबसे युवा महिला खिलाड़ी हैं। यह उनके करियर का महज पांचवां ही टूर्नामेंट है।

कैसे शुरू हुआ टेनिस का सफर

माया का जन्म 12 जून 2009 को तमिलनाडु के कॉइंबाटूर में हुआ। स्कूल में ही आठ साल की उम्र में ही उन्हें पहली बार टेनिस को जानने का मौका मिला। वह स्कूल के बाद एक्टीविटी के तौर पर टेनिस खेलने लगी। इसके बाद उन्होने भारत के पूर्व नंबर वन खिलाड़ी केजी रमेश के साथ टेनिस ट्रेनिंग शुरू की और फिर प्रो सर्व टेनिस अकेडमी में मनोज कुमार के साथ टेनिस सीखा।

माया भारत की दिग्गज खिलाड़ी सानिया मिर्जा और बेलारुस की आर्यना सबलेंका को अपना आदर्श मानती है। उनका खेलने का स्टाइल भी वैसा ही है। वह बेसलाइन पर दबदबा दिखाती हैं और साथ ही नेट पर ही बड़े आत्मविश्वास के साथ खेलती हैं।

माया इस समय स्पेन में हैं। अपने प्रदर्शन के दम पर ही उन्होंने राफेल नाडेल अकेडमी के साथ एक साल का करार हासिल किया। इस अकेडमी में उन्हें राफेल नडाल के ट्रेनिंग सेशन को करीब से देखने का मौका मिला। अब वह अपनी प्रतिभा को निखार कर सानिया मिर्जा की तरह देश का नाम रोशन करने का सपना देख रही है।

चैम्पियंस ट्रॉफी: के नॉकआउट चरण में बहुत खतरनाक हो सकता है पाकिस्तान: शास्त्री

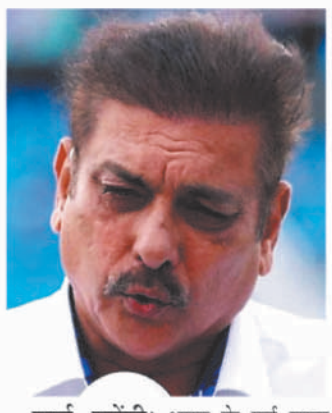

दुबई, एजेंसी। भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री का मानना है कि मोहम्मद रिजवान की अगुआई वाली पाकिस्तान टीम आगामी आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में घरेलू परिस्थितियों में खतरनाक होने के लिए पर्याप्त गहराई रखती है। पाकिस्तान को घरेलू परिस्थितियों में खेलने का फायदा है क्योंकि देश 1996 में विश्व कप के बाद पहली बार किसी सीनियर आईसीसी इवेंट की सह-मेजबानी करने के लिए तैयार है।

आईसीसी रिव्यू के नए एपिसोड में मेजबान संजना गणेशन के साथ बात करते हुए शास्त्री ने कहा, जब आप उपमहाद्वीप में अपने घरेलू मैदान पर खेलते हैं तो हमेशा दबाव होता है - चाहे वह भारत हो, श्रीलंका हो, बांग्लादेश हो या पाकिस्तान - उम्मीदें बहुत अधिक होती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि पाकिस्तान ऐसी टीम है, जिसने पिछले छह से आठ महीनों में सफेद गेंद वाले क्रिकेट में जो अनुभव हासिल किया है, उसके आधार पर उसने कुछ बेहतरीन प्रदर्शन किए हैं, खासकर दक्षिण अफ्रीका में।

प्रतिभाशाली युवा सलामी बल्लेबाज सैम अयूब की अनुपस्थिति के बावजूद शास्त्री ने सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करने के लिए घरेलू टीम का समर्थन किया और नॉकआउट चरणों में बहुत खतरनाक प्रतिद्वंद्वी बन सकते हैं। शास्त्री ने कहा, उन्हें शीर्ष पर अयूब की कमी खल रही है, और वह एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। लेकिन पाकिस्तान के पास खतरनाक होने के लिए पर्याप्त गहराई है, खासकर घरेलू परिस्थितियों में। मैं कहूंगा कि उन्हें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करना चाहिए और वहां से, यह किसी का भी खेल हो सकता है। पाकिस्तान अभी भी बहुत, बहुत खतरनाक है, और यदि वे क्वालीफाई करते हैं, तो वे दोगुने अधिक खतरनाक होंगे।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने शास्त्री की भावनाओं को दोहराया और कहा कि पाकिस्तान की तेज गेंदबाजी इकाई टूर्नामेंट में खेल-परिवर्तक साबित हो सकती है। पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू को बताया, मैं रवि से सहमत हूं। सैम अयूब एक उच्च गुणवत्ता वाले खिलाड़ी हैं, और उनकी अनुपस्थिति एक बहुत बड़ी कमी है। लेकिन पाकिस्तान की तेज गेंदबाजी ब्रिगेड बहुत अच्छी है। शाहीन अफरीदी और नसीम शाह की अगुआई में उनके पास किसी भी बल्लेबाजी लाइन-अप को परेशान करने की गति और कौशल है।

लंबे समय से खेल रहा हूं, जानता हूं मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है: रोहित शर्मा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में शानदार शतक लगाकर खराब फॉर्म के बाद बल्ले से बढ़िया वापसी की। यह मुकाबला कटक के बाराबाती स्टेडियम में खेला गया था। रोहित का मानना है कि खिलाड़ी का माइंडसेट मजबूत होना बहुत जरूरी है। रोहित शर्मा ने अपनी मानसिक मजबूती पर भरोसा जताया और रविवार को 90 गेंदों में 119 रनों की शानदार पारी खेली, जिसमें 12 चौके और 7 छक्के शामिल थे। इस पारी की बदौलत भारत ने लगातार दूसरी जीत दर्ज कर तीन मैचों की सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली। हाल ही में रोहित न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सके थे।

इसके बाद नागपुर में खेले गए पहले वनडे में भी वह सिर्फ 2 रन बनाकर आउट हो गए थे। इस कारण उनकी काफी आलोचना हो रही थी। लेकिन रोहित ने इस पारी से अपने आलोचकों को जवाब देते हुए कहा, अगर कोई खिलाड़ी सालों तक खेलता आया है और ढेरों रन बनाए हैं, तो इसका मतलब कुछ तो है। उन्होंने कहा कि बाहर की बातें उन्हें प्रभावित नहीं करतीं और कुछ खराब पारियां उनके आत्मविश्वास को नहीं डिगा सकतीं। रोहित ने कहा, मैं लंबे समय से क्रिकेट खेल रहा हूं और जानता हूं कि मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है। मुझे बस मैदान पर जाकर वही करना होता है, जो मैं हमेशा करता आया हूं। मैं अपने खेल को अच्छे से समझता हूं और जानता हूं कि एक-दो खराब पारियां मेरी सोच नहीं बदल सकतीं। यह मेरे लिए एक आम दिन की तरह था। भारतीय कप्तान ने यह भी बताया कि वह हर मैच में पूरी कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा, हमारा काम सिर्फ मैदान पर जाकर अपना सर्वश्रेष्ठ देना है। वही सबसे महत्वपूर्ण है। मैं जब भी बल्लेबाजी करने उतरता हूं, तो मेरी कोशिश हमेशा अच्छा करने की होती है।

उन्होंने यह भी बताया कि खराब फॉर्म के दौरान स्पष्ट सोच रखना बहुत जरूरी होता है। हालांकि, यह आसान नहीं होता। कई बार चीजें आपके पक्ष में होती हैं, कई बार नहीं। लेकिन जब तक आपको पता है कि आपको क्या करना है, बाकी बातें मायने नहीं रखतीं। जब आपने इतने रन बनाए होते हैं, तो आपको बस उसी मानसिकता में लौटने की जरूरत होती है। सुनने में यह आसान लगता है, लेकिन वास्तव में यह मुश्किल होता है। मेरे लिए सबसे जरूरी चीज खेल का आनंद लेना है। आखिरकार, हम क्रिकेट इसी मजे के लिए तो खेलते हैं।

ना बल्ले से रन, कीपिंग भी फीकी... केएल राहुल ने गंवाया गोल्डन चांस

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और इंग्लैंड के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज का दूसरा मुकाबला 9 फरवरी (रविवार) को कटक के बाराबती स्टेडियम में खेला गया. इस मुकाबले में भारतीय टीम ने चार विकेट से जीत दर्ज करके सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त ले ली. मुकाबले में भारतीय टीम के लिए कप्तान रोहित शर्मा ने शतकीय पारी खेली. रोहित ने 90 गेंदों पर 119 रन बनाए, जिसमें 12 चौके और 7 छक्के शामिल रहे.

रोहित शर्मा ने तो फॉर्म में वापसी कर ली, लेकिन विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल ने इस मैच में भी निराश किया. राहुल सिर्फ 10 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. राहुल इससे पहले नागपुर वनडे में भी महज 2 रन बना पाए थे. दोनों मुकाबले में राहुल के पास मैच फिनिश करने का मौका था, लेकिन वो टीम को जीत दिलाने से पहले ही पवेलियन लौट गए.

रणजी ट्रॉफीः

बल्ले के बाद शम्स मुलानी और तनुष कोटियान से गेंद से भी दिखाया दम

नई दिल्ली, एजेंसी। कप्तान अंकित कुमार की शतकीय पारी की मदद से हरियाणा ने गत चैंपियन मुंबई के खिलाफ रणजी ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल के दूसरे दिन रविवार को स्टंप तक पांच विकेट पर 263 रन बनाकर अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। सलामी बल्लेबाज अंकित ने मुंबई के गेंदबाजों पर हावी होते हुए 136 रन की पारी खेलकर लगातार दूसरा शतक जड़ा। दूसरे दिन के खेल के बाद हरियाणा की टीम मुंबई से पहली पारी के आधार पर 53 रन पीछे है।

शतक से चूक गए तनुष कोटियान

इससे पहले तनुष कोटियान (97) तीन रन से शतक से चूक गये लेकिन उनकी शानदार बल्लेबाजी से मुंबई की टीम पहली पारी में 315 रन बनाने में सफल रही।मुंबई की टीम ने दिन की शुरुआत आठ विकेट पर 278 रन से की थी। कोटियान संयमित बल्लेबाजी से प्रथम श्रेणी में तीसरे शतक की ओर बढ़ रहे थे लेकिन सुमित कुमार (81 रन पर तीन विकेट) का तीसरा शिकार बन गये। दसवें क्रम के बल्लेबाज मोहित अवस्थी (21) टीम को 300 रन के पार पहुंचाने में सफल रहे। मुंबई ने दिन की शुरुआत में 45 मिनट बल्लेबाजी की जिससे पिच की नमी कम हो गयी और हरियाणा के बल्लेबाजों के लिए परिस्थितियां थोड़ी आसान हो गयी। अंकित ने लक्ष्य दलाल (34) के साथ पहले विकेट के लिए 87 रन की साझेदारी कर मजबूत नींव रखी। दिन के दूसरे सत्र में शारदुल ठाकुर ने उन्हें दलाल को आउट कर मुंबई को पहली सफलता दिलायी।

फिर बरसे ठाकुर के शोले, 6 बल्लेबाजों को अकेले किया ढेर, 82 गेंदों पर एक भी रन नहीं दिया

नई दिल्ली, एजेंसी। शार्दुल ठाकुर ने रणजी ट्रॉफी में मानो शोले ही बरसा रखे हैं. ये खिलाड़ी गेंद और बल्ले दोनों से कहर बरपा रहा है. एक बार फिर शार्दुल ठाकुर ने इस टूर्नामेंट में कमाल किया है. इस बाहर ठाकुर ने हरियाणा के खिलाफ क्वार्टर फाइनल मैच में अपना दम दिखाया. दाएं हाथ के इस ऑलराउंडर ने हरियाणा के खिलाफ अकेले ही 6 बल्लेबाजों को ढेर कर दिया. ठाकुर ने 18.5 ओवर में महज 58 रन देकर 6 विकेट झटके. बड़ी बात ये है कि शार्दुल ठाकुर ने बेहद टाइट गेंदबाजी की.

उन्होंने 18.5 ओवर में से 82 गेंदों पर एक भी रन नहीं दिया. शार्दुल ठाकुर ने हरियाणा के खिलाफ सबसे पहले लक्ष्य दलाल का शिकार किया. इसके बाद वो रोहित प्रमोद शर्मा काविकेट ले गए. देखते ही देखते उन्होंने हरियाणा के लोअर ऑर्डर को पूरी तरह से तबाह कर दिया. इस खिलाड़ी ने अनुत ठकराल, जयंत यादव, अंशुल कंबोज और अजित चहल को भी निपटा दिया. ठाकुर ने रणजी ट्रॉफी में हमेशा मुश्किल मौकों पर अपना दम दिखाया है.

एशियाई खेलः

एशियाड के स्वर्ण विजेता तोंडईमान का कमाल, राष्ट्रीय खेलों की ट्रैप स्पर्धा में जीता सोना

रुद्रपुर (उत्तराखंड), एजेंसी। दिल्ली की कीर्ति गुप्ता (42 अंक) से पहला स्थान हासिल करने से चूक गई जबकि हरियाणा की आशिमा अहलावत (32 अंक) ने कांस्य पदक जीता। एशियाई खेलों की टीम स्पर्धा के स्वर्ण पदक विजेता तमिलनाडु के निशानेबाज पृथ्वीराज तोंडईमान ने रविवार को यहां राष्ट्रीय खेलों की पुरुष ट्रैप स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता जबकि मध्य प्रदेश की नीरू ढांडा महिला स्पर्धा में शीर्ष पर रहीं। तोंडईमान ने ट्रैप फाइनल में 42 का स्कोर बनाकर शीर्ष स्थान हासिल किया जबकि राजस्थान के अली अमन इलाही ने 41 के साथ रजत पदक जीता।

उत्तराखंड के आर्यवंश त्यागी ने 29 के साथ कांस्य पदक प्राप्त किया। तोंडईमान 2023 में हांग्झोउ एशियाई खेलों में पुरुष ट्रैप टीम स्पर्धा में स्वर्ण जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा थे। महिला वर्ग में मध्य प्रदेश की नीरू ढांडा ने 43 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। दिल्ली की कीर्ति गुप्ता (42 अंक) से पहला स्थान हासिल करने से चूक गईं जबकि हरियाणा की आशिमा अहलावत (32 अंक) ने कांस्य पदक जीता।

वैदेही राष्ट्रीय खेलों के टेनिस महिला एकल सेमीफाइनल में पहुंचीं

गत चैंपियन गुजरात की वैदेही चौधरी रविवार को राष्ट्रीय खेलों की टेनिस प्रतियोगिता के महिला एकल वर्ग के सेमीफाइनल में पहुंच गईं। वैदेही ने क्वार्टर फाइनल के एकतरफा मुकाबले में हरियाणा की अंजलि राठी को 6-1, 6-1 से हराया। सेमीफाइनल में उनका मुकाबला सोमवार को महाराष्ट्र की आकांक्षा निटुरे से होगा।

आकांक्षा ने एक अन्य क्वार्टर फाइनल मुकाबले में तेलंगाना की लक्ष्मी सिरी डांडू को 6-3, 4-6, 6-2 से हराया। दूसरा सेमीफाइनल मुकाबला कर्नाटक की अमोदिनी नाइक और महाराष्ट्र की वैष्णवी अडकर के बीच होगा। अमोदिनी ने अंतिम आठ में हरियाणा की अदिति रावत को 4-6, 6-4, 6-3 से हराया, जबकि वैष्णवी तमिलनाडु की लक्ष्मी प्रभा अरुणकुमार पर 6-3, 7-5 से विजेता बनीं।

महिला युगल में वैदेही और जील देसाई की गुजरात की जोड़ी ने हरियाणा की अंजलि राठी और अदिति त्यागी को 6-3, 6-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। स्वर्ण पदक के मुकाबले में उनका सामना महाराष्ट्र की पूजा इंगले और आकांक्षा निटुरे की जोड़ी से होगा। महाराष्ट्र की जोड़ी ने सेमीफाइनल में उत्तराखंड की दीया चौधरी और जया कपूर को 5-7, 6-4, 10-8 से हराया।

खेल मंत्रालय ने गठन की खेल सलाहकार समिति, पेस-मैरीकॉम और साइना भी शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। यह समिति खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर भी नजर रखेगी। खेल राज्य मंत्री रक्षा खडसे समिति की वाइस चेयरपरसन होंगी। समिति खिलाड़ियों के दुखों का भी निपटारा करेगी। खेल मंत्रालय ने नई प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने के अलावा चयन में पारदर्शिता के लिए 17 सदस्यीय खेल सलाहकार समिति का गठन किया है

। खेल मंत्री मनसुख मांडविया की अगुवाई वाली इस समिति में ओलंपिक पदक विजेता लिएंडर पेस, साइना नेहवाल, मैरी कॉम भी शामिल हैं। यह समिति खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर भी नजर रखेगी। खेल राज्य मंत्री रक्षा खडसे समिति की वाइस चेयरपरसन होंगी।

समिति खिलाड़ियों के दुखों का भी निपटारा करेगी। समिति के अन्य सदस्यों में शाइनी अब्राहम, जफर इकबाल, हीना सिद्धू भी हैं। समिति का सहयोग करने के लिए खेल विशेषज्ञों का पैनल भी गठित किया है। इसमें रानी रामपाल, विजेंदर सिंह, अल्का तोमर, हंसा शर्मा, डीके राठौड़, डोला बनर्जी, शिव सिंह जैसे खिलाड़ी और कोच शामिल हैं।

सिटी टाइगर

विन्ध्य टाइगर | सीधी, मंगलवार 11 फरवरी 2025 | 8

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव शुक्ल ने बताया कि प्रयागराज महाकुंभ मेले से वापस आते समय गत रात्रि 8 श्रद्धालु दुर्घटनाग्रस्त होकर घायल हो गए थे जिन्हें तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चाकघाट में ले जाकर समुचित उपचार दिया गया।

महाकुंभ यात्रियों के लिए रीवा संभाग में की गई व्यवस्थाओं ने प्रदेश का मान बढ़ाया है : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से महाकुंभ यात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं की समीक्षा की

रीवा। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रयागराज महाकुंभ के लिए रीवा से होकर जाने वाले तीर्थयात्रियों की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकुंभ के कारण लाखों यात्री मध्यप्रदेश की धरती से होकर प्रयागराज में महाकुंभ का पुण्य लाभ लेने जा रहे हैं। इन्हें सभी स्थानों पर बेहतर सुविधाएं दी जा रही हैं। रीवा संभाग के सभी जिलों में तीर्थयात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं ने प्रदेश का मान बढ़ाया है। प्रयागराज में अधिक भीड़ के कारण रीवा संभाग के जिन स्थानों में वाहन रोकने की व्यवस्था की गई है उनमें सेवाभाव से तीर्थयात्रियों की सहायता करें। भोजन, पानी, ठहरने और उपचार की सुविधा 27 फरवरी तक लगातार जारी रखें। जनप्रतिनिधि, प्रशासन और स्वयंसेवी संगठन मिलकर तीर्थयात्रियों की सेवा करें। रीवा प्रयागराज जाने का मुख्य प्रवेश द्वार है। महाराष्ट्र, कर्नाटक,

आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ से हजारों वाहन प्रतिदिन रीवा संभाग के विभिन्न जिलों से गुजरते हुए प्रयागराज पहुंच रहे हैं। प्रयागराज प्रशासन से समन्वय बनाकर वाहनों के सुगम आवागमन की व्यवस्था सुनिश्चित करें। प्रशासनिक अधिकारी, जनप्रतिनिधियों और स्वयंसेवी संगठनों के साथ बैठक करके उनके सुझावों के अनुसार व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि 10 जनवरी से ही प्रशासन ने रीवा प्रयागराज मार्ग के विभिन्न स्थानों पर बोर्डिंग प्वाइंट बनाकर वाहनों को व्यवस्थित करने तथा रैन बसेरा में तीर्थयात्रियों के लिए व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के प्रबंध किए हैं। अधिकारी-कर्मचारी 24 घंटे तैनात रखकर तीर्थयात्रियों के लिए भोजन, पानी, ठहरने और उपचार की व्यवस्था में लगे हुए हैं। पार्टी के कार्यकर्ता तथा सामाजिक संगठन भी पूरे मन से तीर्थयात्रियों की सेवा कर रहे हैं। विधायक त्योंथर श्री सिद्धार्थ तिवारी ने कहा कि मुख्यमंत्री जी आपकी दूरदर्शिता के कारण महाकुंभ शुरू होने से पहले ही चाकघाट में प्रशासन ने समुचित व्यवस्थाएं जन सहयोग से सुनिश्चित कर दी। जिसके कारण 29 जनवरी को उमड़ी भीड़ का प्रबंधन कुशलता से हो गया। किसी प्रकार की दुर्घटना नहीं हुई। चाकघाट में जनपद पंचायत, नगर पंचायत तथा आसपास की ग्राम पंचायतों के सहयोग से एक महीने से तीर्थयात्रियों को निःशुल्क भोजन कराया जा रहा है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में विधायक मनगवां श्री नरेन्द्र प्रजापति ने कहा कि मेरी विधानसभा में तीन स्थानों में वाहनों के रूकने की व्यवस्था की गई है। जोगिनिहाई टोल प्लाजा, मनगवां तथा श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव में सबके सहयोग से तीर्थयात्रियों को भोजन कराया जा रहा है। भाजपा जिलाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि आपके निर्देशन पर प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की टीम ने कठिन समय में तीर्थयात्रियों की बढ़ चढ़कर सेवा की है इसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार है। प्रशासन ने चुस्त-दुरूस्त व्यवस्था रखकर भीड़ को नियंत्रित किया तथा तीर्थयात्रियों की सेवा की।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने रीवा संभाग के सभी जिलों में तीर्थयात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी दी। कमिश्नर ने बताया कि मैहर से चाकघाट तक 13 स्थानों पर वाहनों के रोकने के स्थान बनाए गए हैं। इन सभी में यात्रियों के ठहरने, भोजन, पानी, चाय और उपचार की पूरी सुविधा है। प्रशासन और पुलिस की टीम 24 घंटे इनमें तैनात रहती है। यात्रियों की सेवा में जनप्रतिनिधियों और सामाजिक संगठनों द्वारा भी पूरा सहयोग किया जा रहा है। आमजनता भी सेवाभाव से तीर्थयात्रियों की सहायता कर रही है। सभी स्थानों पर मेडिकल टीम तैनात है।

सुरक्षित इंटरनेट दिवस पर आज जागरूकता कार्यशाला

रीवा

प्रतिवर्ष संपूर्ण विश्व में फरवरी माह के द्वितीय मंगलवार को सुरक्षित इंटरनेट दिवस मनाया जाता है। इंलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 11 फरवरी को सुरक्षित इंटरनेट दिवस पर सुरक्षित इंटरनेट दिवस समारोह थीम एक बेहतर इंटरनेट के लिए एक साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर जिला स्तरीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन 11 फरवरी को शाम 4 बजे टीएल बैठक में आयोजित किया गया है। इस कार्यशाला का उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना और इंटरनेट के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देना है। विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये गये हैं कि कार्यशाला में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने लाड़ली बहना योजना की राशि बहनों के खातों में की अंतरित

रीवा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्चुअल माध्यम से लाड़ली बहना योजना की राशि बहनों के खातों में अंतरित की। इस दौरान किसान सम्मान निधि के पंजीकृत किसानों के बैंक खाते में भी राशि अंतरित की गई। मुख्यमंत्री जी ने देवास जिले के सोनकच्छ से राज्य स्तरीय समारोह से सिंगल क्लिक से 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के खाते में 1553 करोड़ रूपये अंतरित किये। रीवा जिले के एक लाख 68 हजार से अधिक किसानों के खाते में किसान सम्मान निधि की राशि अंतरित हुई। कलेक्ट्रेट के एनआईसी सहित जिले के जनपद व ग्राम स्तर पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा व सुना गया। एनआईसी में इस दौरान संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, सहायक संचालक महिला एवं बाल विकास अनिल जैन सहित हितग्राही उपस्थित रहे।

कलेक्टर आज करेंगी टीएल पत्रों की समीक्षा

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा करेंगी। बैठक 11 फरवरी को शाम 4 बजे से आरंभ होगी। बैठक में टीएल पत्रों के निराकरण, खाद्यान्न वितरण, कृषि आदान की भी समीक्षा की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने देहदान व अंगदान को प्रोत्साहित करने लिये ऐतिहासिक निर्णय

उप मुख्यमंत्री ने व्यक्त किया आभार

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देहदान एवं अंगदान को प्रोत्साहन देने और देहदान करने वाले नागरिकों का सम्मान करने के लिये ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिनंदन किया है और आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह समाज के लिए प्रेरणादायक कदम है। उन्होंने कहा कि देहदान और अंगदान जीवन का सबसे महान दान है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव का यह निर्णय निश्चित ही अधिक से अधिक लोगों को अंगदान और देहदान के लिए प्रेरित करेगा। इसके माध्यम से अनेक लोगों को नया जीवन प्राप्त होगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह पहल चिकित्सा सेवा क्षेत्र को नई दिशा प्रदान करेगी, साथ ही समाज में मानवता एवं सेवा के मूल्यों को भी प्रोत्साहित करेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उन सभी व्यक्तियों और परिवारजन का अभिनंदन किया है जिन्होंने अंगदान और देहदान के लिए स्वीकृति दी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देहदान करने वाले व्यक्तियों का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही प्रदेश में अंग प्रत्यारोपण से संबंधित एक राज्यस्तरीय संस्थान की स्थापना की जाएगी। अंगदान करने वाले व्यक्तियों के परिवारों को आयुष्मान कार्ड प्रदान करने और राष्ट्रीय पर्वों पर सम्मानित करने का निर्णय भी लिया गया है।

फीडर सेपरेशन में देरी करने वाली निर्माण एजेंसी को ब्लैकलिस्टेड करें : कमिश्नर

रीवा। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने ऊर्जा विभाग की आरडीएसएस योजना के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर कार्यालय में आयोजित बैठक में कमिश्नर ने कहा कि आरडीएसएस योजना का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को निर्बाध और पर्याप्त बिजली की आपूर्ति की व्यवस्था करना है। इस योजना से स्वीकृत निर्माण कार्यों की समय सीमा समाप्त हो गई है। योजना के तहत फीडर सेपरेशन में देरी करने वाली निर्माण एजेंसियों को ब्लैकलिस्टेड करने की कार्यवाही करें। वर्तमान में जारी निर्माण कार्यों को दो माह में पूरा कराएं। ऊर्जा

विभाग के सभी अधिकारी बिजली उपभोक्ताओं से सतत संपर्क में रहकर बिजली आपूर्ति की समस्याओं का निराकरण करें। बिगड़े ट्रांसफार्मर तीन दिन की समय सीमा में अनिवार्य रूप से बदलें। न्यूनतम 10 प्रतिशत राशि जमा न करने से जो ट्रांसफार्मर बंद हैं उनमें उपभोक्ताओं से लंबित राशि जमा कराकर बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने बैठक से बिना सूचना अनुपस्थित सीधी के कार्यपालन यंत्री तथा अधीक्षण यंत्री को नोटिस देने के निर्देश दिए।

कमिश्नर ने कहा कि आरडीएसएस योजना से संभाग में 21 सब स्टेशनों का निर्माण स्वीकृत किया गया है। इनमें से केवल 13 का निर्माण कार्य पूरा हुआ है। शेष 8 सब स्टेशनों का निर्माण कार्य दो माह में पूरा कराएं। इनके निर्माण में यदि किसी तरह की बाधा है तो साप्ताहिक टीएल बैठक में कलेक्टर के माध्यम से विभागीय समन्वय बनाकर बाधा दूर कराएं। फीडर सेपरेशन 590 फीडरों में किया जाना है। इनमें से केवल 172 में सेपरेशन का कार्य पूरा हुआ है। शेष कार्य में गति लाएं। आगामी समीक्षा बैठक में निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों की भी उपस्थिति सुनिश्चित करें। सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों को तत्परता से निराकृत करें। बिजली की आपूर्ति तथा बिलों में सुधार के प्रकरण पर विशेष ध्यान दें। शिकायतों को लेबल-1 पर ही निराकृत करने के प्रयास करें। बैठक में एडिशनल चीफ इंजीनियर रमा पाण्डेय ने विभागीय कार्यों की जानकारी दी। बैठक में अधीक्षण यंत्री रीवा बीके शुक्ला ने बताया कि रीवा में स्वीकृत बैठक में एडिशनल चीफ इंजीनियर रमा पाण्डेय ने विभागीय कार्यों की जानकारी दी। बैठक में अधीक्षण यंत्री रीवा बीके शुक्ला ने बताया कि रीवा संभाग में स्वीकृत 21 सब स्टेशनों में से 14 का निर्माण पूरा हो चुका है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सहयोग कर प्रदेश को फाईलेरिया मुक्त बनायें: उप मुख्यमंत्री

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने ग्वालियर से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय फायलेरिया उन्मूलन अभियान (मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) का शुभारंभ किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश के सभी संबंधित जिलों के अधिकारियों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं अन्य विभागों के मैदानी कर्मचारियों को अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि फायलेरिया उन्मूलन के लिए जनभागीदारी अत्यंत आवश्यक है। प्रदेश में 10 फरवरी से 25 फरवरी तक 9 जिलों के 23 चिन्हित विकासखण्डों में प्रशिक्षित दवा सेवकों के माध्यम से बूथ डे एवं घर-घर भ्रमण के द्वारा फाइलेरिया रोधी दवा का सेवन निःशुल्क कराया जाएगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आमजन से अपील की है कि वे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के निर्देशानुसार डीईसी, एल्बेंडाजोल और आइवरमेक्टिन दवाओं का सेवन अवश्य करें और अभियान को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न विभागों के कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया और पूर्ण मनोयोग एवं समर्पण से अभियान को सफल बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के साथ सभी विभागों के समन्वित प्रयास से ही यह सफल हो सकता है। उन्होंने विभिन्न विभागों के मैदानी कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया कि वे समर्पण के साथ कार्य करें और शत प्रतिशत लक्षित जनसमुदाय द्वारा दवा सेवन सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि फायलेरिया उन्मूलन के इस महत्वपूर्ण अभियान को सफल बनाने के लिए सभी विभागों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं, ताकि वर्ष-2030 तक प्रदेश को फायलेरिया से मुक्त बनायें। राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत मध्य प्रदेश के 9 जिलों मउगंज, पन्ना, छतरपुर, उमरिया, दतिया, कटनी, टीकमगढ़, निवाड़ी एवं शहडोल के 23 विकासखंडों में 10 फरवरी से 25 फरवरी तक मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान का संचालन किया जाएगा। एमडीए अभियान के अंतर्गत 23 चिन्हित ब्लॉकों की 58,08,577 की आबादी में से 52,85,805 लाभार्थियों को दवा खिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस दौरान बूथ-डे गतिविधि आयोजित की जाएगी, जहां लक्षित जनसमुदाय को दवा सेवन कराया जाएगा।

15 फरवरी से 21 फरवरी तक स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर जाकर दवा वितरित करेंगे और समक्ष में दवा सेवन कराएंगे। जो व्यक्ति इन तिथियों में दवा सेवन नहीं कर पाएंगे, उनके लिए 22 फरवरी से 25 फरवरी तक मॉप-अप राउंड का संचालन होगा।

स्व. श्री मोहन सिंह गहरवार की पुण्यतिथि में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रीवा

सीएम राइज स्कूल रघुराजगढ़ में स्व. श्री मोहन सिंह गहरवार जी की पुण्यतिथि में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का हुआ आयोजन किया गया। इस अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में विद्यालय के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने भजन और गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के उपरांत विभिन्न शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक विधाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती आरती सिंह, सेवानिवृत्त सहायक संचालक (शिक्षा) के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि स्व. श्री गहरवार जी इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने शिक्षा के विकास और समाज में जागरूकता फैलाने के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी प्रेरणादायी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं और पूरा क्षेत्र उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है। कार्यक्रम में श्री छोटेलाल साकेत सरपंच, देवेंद्र प्रताप सिंह, संतोष सिंह, धर्मेंद्र कुमार पांडेय, कमलेश कुमार मिश्रा, विजयलक्ष्मी चौरसिया, गणमान्य नागरिक सहित विद्यालय के शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं एवं अभिभावकगण उपस्थित रहे।

सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के साथ तीर्थयात्रियों की सेवा कर रहे पुलिस अधिकारी

रीवा। प्रयागराज में महाकुंभ मेले के कारण रीवा संभाग के मैहर, सतना और रीवा जिले के सभी प्रमुख मार्गों पर लगातार वाहनों का दबाव बना रहा। रीवा जिले में बेला, जोगिनिहाई, गंगेव, सोहागी तथा चाकघाट में वाहनों के ठहरने की व्यवस्था की गई। प्रशासन के साथ-साथ पुलिस अधिकारी भी रात-दिन सड़कों पर तैनात रहकर व्यवस्था बनाने में जुटे रहे। सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के साथ पुलिस अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों को सेवाभाव से भोजन कराया। वाहन रोककर तीर्थयात्रियों को पानी तथा नाश्ता प्रदान किया।

डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय के मार्गदर्शन में संभाग के सभी जिलों में पुलिस अधीक्षक एवं अन्य पुलिस अधिकारी यातायात प्रबंधन तथा सुरक्षा व्यवस्था में लगातार जुटे रहे। यातायात को सुगम बनाने के लिए वाहनों के मार्ग में परिवर्तन करने, वाहनों को रोकने, टोल प्लाजा में लगने वाले जाम की समस्या को दूर करने में भी पुलिस अधिकारी मुस्तैदी से तैनात रहे। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल, प्रशिक्षु आईपीएस ओमप्रकाश लगातार भ्रमण करके स्थिति का जायजा ले रहे हैं। यातायात की दृष्टि से सबसे कठिन स्थल सोहागी घाटी तथा चाकघाट में एसडीओपी त्योंथर उदित मिश्रा एवं एसडीओपी सिरमौर उमेश प्रजापति मुस्तैदी से तैनात हैं। वाहनों के लगातार दबाव के बीच यातायात को सुगम बनाने के लिए लगातार प्रयास किए गए।

श्रद्धालुओं के लिए भोजन एवं चाय-नाश्ते की व्यवस्था के लिए अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई

रीवा। प्रयागराज महाकुंभ में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु रीवा जिले की सीमा से होकर जा रहे हैं। इस दौरान जिले के विभिन्न स्थानों में श्रद्धालुओं को खाने और चाय-पानी की व्यवस्था प्रशासन द्वारा कराई जा रही है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए चाय, पानी तथा भोजन आदि की व्यवस्थाओं की मॉनीटरिंग के लिए अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है। महाप्रबंधक उद्योग जेपी तिवारी एवं कार्यपालन यंत्री संजय पाण्डेय सोहागी पहाड़ से चाकघाट तक तथा कार्यपालिक निदेशक एमपीआईडीसी यूके तिवारी एवं कार्यपालन यंत्री डीएल कनेल मनगवां मोड़ से श्रीयुत कालेज गंगेव तक दो-दो सौ मीटर के अंतराल में डिवाइडर पर स्टार लगाकर श्रद्धालुओं को पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ ही टैंकर की व्यवस्था भी सुनिश्चित कराएंगे। इसी प्रकार जिला प्रबंधक कोऑपरेटिव बैंक ज्ञानेन्द्र पाण्डेय जोगिनिहाई टोल प्लाजा, जिला आपूर्ति नियंत्रक चन्द्रभान सिंह जादौन श्रीयुत कालेज गंगेव, जिला प्रबंधक वेयर हाउस कमलभान सिंह बागरी एवं पीयूष माली जिला प्रबंधक नान सोहागी पहाड़ के ऊपर टोल के बाद तथा सीएमओ त्योंथर अजय पाण्डेय, सीएमओ चाकघाट संजय सिंह तथा जेएसओ विनीत मिश्रा को चाकघाट में भोजन एवं चाय-पानी की व्यवस्था सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसी प्रकार बेला बाईपास में प्रथम पाली में सहायक संचालक अंजना सिंह, द्वितीय पाली में जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता तथा तृतीय पाली में कार्यपालन यंत्री वसीम खान को भोजन एवं चाय-पानी व्यवस्था वितरण के लिए मॉनीटरिंग अधिकारी नियुक्त किया गया है। जबकि जोगिनिहाई टोल प्लाजा में प्रथम पाली में उप संचालक कृषि यूपी बागरी, द्वितीय पाली में डीपीसी रामलल्लू दीपांकर तथा तृतीय पाली में कार्यपालन यंत्री केके तिवारी को, श्रीयुत कालेज गंगेव में प्रथम पाली में सहायक संचालक उद्यान बीएस सेंगर, द्वितीय पाली में डीपीओ महिला एवं बाल विकास श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय एवं तृतीय पाली में जिला आबकारी अधिकारी अनिल जैन को तथा चाकघाट के लिए प्रथम पाली में जिला संयोजक कमलेश्वर सिंह को, द्वितीय पाली में जिला खनिज अधिकारी श्रीमती दीपमाला तिवारी को तृतीय पाली में आरटीओ मनीष त्रिपाठी को व्यवस्थाओं के मॉनीटरिंग का दायित्व सौंपा गया है। कलेक्टर ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देश दिए हैं कि सोहागी स्थित ग्राम पंचायत भवन की विपरीत दिशा में एंबुलेंसी 24 घंटे उपलब्ध रखें। उन्होंने प्रत्येक प्वाइंट पर चिकित्सकों एवं सहयोगी कर्मचारियों की आठ-आठ घंटे की ड्यूटी लगाने तथा पर्याप्त संख्या में जीवन रक्षक दवाइयों की किट एवं इंसुलिन आदि की व्यवस्थाएं रखने के निर्देश कलेक्टर द्वारा सीएमएचओ को दिए गए हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक राजेन्द्र तिवारी द्वारा एस आर के प्रिंटिंग प्रेस विवि रोड खुटेही रीवा से मुद्रित कर जीडीसी के सामने उत्तरी करौदिया सीधी से प्रकाशित। संपादक-राजेन्द्र तिवारी, आर.एन.आई नं. 47589/88, डाक पंजीयन : MP/SDL/DN/-30/2015-17, दूरभाष : 09424315633,7389444833